RNI No. UPHIN/2000/03766 ISSN No. 2581-3528 ₹ : 20

केशव संवाद

1 अप्रैल-2026

रामनगरी में श्री यंत्र स्थापना सांस्कृतिक पुनर्जागरण का प्रतीक

कथन

भारतीय परंपरा में नारी को केवल परिवार की संरक्षक के रूप में नहीं देखा गया है, बल्कि उसे ज्ञान, शक्ति और समृद्धि का प्रतीक माना गया है। आज की भारतीय महिलाएं शिक्षा, विज्ञान, प्रशासन, खेल, उद्यमिता और सामाजिक सेवा जैसे अनेक क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल कर रही हैं और राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। किसी भी समाज की वास्तविक प्रगति तभी संभव है, जब महिलाओं को समान अवसर, सम्मान और सुरक्षा प्राप्त हो। महिलाओं को सभी क्षेत्रों में समान अवसर मिलना अत्यंत आवश्यक है।

– द्रौपदी मुर्मू, राष्ट्रपति

पिछले एक दशक में देश के माइंडसेट में एक बड़ा परिवर्तन आया है। आज गाँव, कस्बा, शहर की सीमाओं से परे, भारत का हर युवा कुछ नया करना चाहता है, उसमें कुछ कर गुजरने का जज्बा है। नई पीढ़ी का ये नया माइंडसेट, देश की सबसे बड़ी ताकत है, उज्जवल भविष्य की सबसे बड़ी पूंजी है। इसे केपिटालाईज करने के लिए हमें अपने एजुकेशन सिस्टम को निरंतर आधुनिक बनाए रखना है, अपग्रेड करते ही रहना है। नई एजुकेशन पॉलिसी ने इसके लिए जरूरी बेस तैयार कर दिया है। अब बहुत आवश्यक है कि हमारे कैरिकुलम मार्केट की जरूरतों के हिसाब से अपडेटेड रहें! हमें हमारे एजुकेशन सिस्टम को Real World Economy से जोड़ने की प्रक्रिया और तेज करनी होगी।

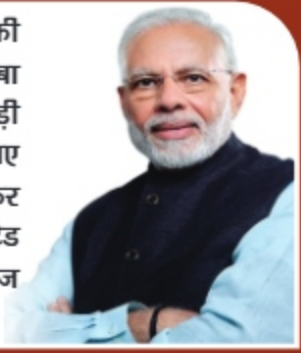

– नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

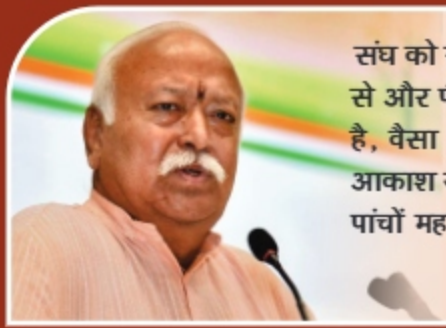

संघ को समझना है तो संघ में आकर ही समझना पड़ेगा। केवल बाहर से देखकर, कल्पना से और फैलाये जा रहे नैरेटिव से संघ को नहीं समझ सकते, क्योंकि संघ का जैसा काम है, वैसा दुनिया में और कहीं नहीं है। जिस तरह से सूर्य जैसा कोई दूसरा सूर्य नहीं, आकाश जैसा दूसरा आकाश नहीं है, उसी तरह से संघ जैसा दूसरा संगठन नहीं है। आज पांचों महाद्वीपों से महत्वपूर्ण लोग संघ को देखने, जानने और समझने के लिए आते हैं।

–डॉ. मोहन भागवत, सरसंघचालक, रा.स्व.संघ

संघ का कार्य व्यक्ति निर्माण के माध्यम से राष्ट्रीय चरित्र निर्माण करना है। व्यक्तिगत चरित्र और राष्ट्रीय चरित्र दोनों समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। यदि व्यक्ति में ईमानदारी, प्रामाणिकता और अनुशासन है, तो उसमें राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व की भावना भी होनी चाहिए। समाज और राष्ट्र के हित में कर्तव्यबोध का विकास आवश्यक है। सेवा कार्यों को समाज के नाम से संचालित किया जाना चाहिए। संघ की भूमिका प्रेरणा और पहल की है, लेकिन प्रकल्प समाज के होते हैं। सेवा कार्य प्रसिद्धि या प्रतिष्ठा के लिए नहीं, बल्कि देशभक्ति, सामाजिक समरसता और सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना से किए जाने चाहिए।

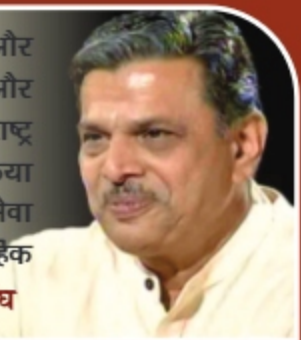

–दत्तात्रेय होसबाले, सरकार्यवाह, रा.स्व.संघ

हमारी सरकार ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 5T विजन– परंपरा, प्रौद्योगिकी, पारदर्शिता, विश्वास और परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए काम किया। 'जब परंपरा, प्रौद्योगिकी, पारदर्शिता और विश्वास एक साथ आते हैं, तो परिवर्तन होता है। हमने भारत की परंपराओं और विरासत का सम्मान किया और इससे स्वाभाविक रूप से विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ। जब हम इसे प्रौद्योगिकी से जोड़ते हैं, तो यह और भी आसान हो जाता है। पारदर्शिता लोगों में विश्वास पैदा करती है और यही विश्वास अंततः परिवर्तन का कारण बनता है।

–योगी आदित्यनाथ, मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

केशव संवाद

RNI No. UPHIN/2000/03766

ISSN No. 2581-3528

1 अप्रैल, 2026

वर्ष : 26 अंक : 04

सलाहकार समिति

उदयभान सिंह, रविन्द्र सिंह चौहान
रविन्द्र कुमार श्रीवास्तव, मुकेश कुमार

संपादक

कृपाशंकर

कार्यकारी संपादक

प्रोफेसर (डॉ.) नीलम कुमारी

प्रबंध निदेशक

डॉ. अनिल कुमार निगम

प्रबंध संपादक

पंकज राणा

पृष्ठ संयोजन

वीरेंद्र पोखरियाल

संपादकीय कार्यालय

प्रेरणा शोध संस्थान व्यास
सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा -201309
फोन न. 0120 4565851
ईमेल : keshavsamvad@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

स्वामी पंकज कुमार की ओर से मुद्रक/प्रकाशक रमन चावला द्वारा चन्द्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा.लि. नोएडा से मुद्रित तथा केशव भवन 105 आर्यनगर सूरजकुंड रोड मेरठ से प्रकाशित

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा मेरठ की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा। संपादक

विषय सूची

हरीश राणा इच्छामृत्यु मामला : करुणा और न्याय के बीच संतुलन.....05
हिन्दुत्व के समाचार.....06
उत्तर प्रदेश की सुर्खियां.....08
उत्तर प्रदेश में हिन्दुत्व.....10
भारतीय ज्ञान परम्परा का पुनर्जागरण.....12
लव जिहाद एक विश्लेषण.....13
विश्व में हिन्दुत्व/वीरांगना.....14
सोशल मीडिया में हिंदुत्व.....15
एन सी आर के समाचार.....16
आनुषांगिक संगठन.....17
सरसंघचालक -ध्येय वाक्य.....18
स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत की सीमाओं की सुरक्षा का विश्लेषण.....19
शताब्दी वर्ष के कार्यक्रम का विश्लेषण.....20
भारतवर्ष की कालगणना.....21
पुस्तक समीक्षा.....22
आत्मनिर्भर भारत के समाचार.....23
महान क्रांतिकारी.....24
वसंत ऋतु : नवीनीकरण, संतुलन और शुद्धिकरण का आयुर्वेदिक काल.....26
पंच परिवर्तन.....27
आत्मनिर्भरता.....28
पर्यावरण.....29
नागरिक कर्तव्य.....30
नरेंद्र मोदी स्टेडियम पर भारतीय टीम ने रचा इतिहास.....31
प्रेरक प्रसंग.....32
दो पीढ़ियां : कहानी.....33
बाल कहानी/कविता.....34

पाठकगण पत्रिका के बारे में अपने सुझाव एवं प्रतिक्रिया, 'संपादक के नाम पत्र' शीर्षक से ई-मेल (keshavsamvad@gmail.com) के माध्यम से भेज सकते हैं। चुने हुए पत्रों को पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

नव संवत्सर 2083: परंपरा, वैश्विक चेतना और भारत का उभरता नेतृत्व

नव संवत्सर के शुभारंभ के साथ जब विक्रम संवत 2083 का प्रथम प्रभात उदित होता है, तब यह केवल भारतीय कालगणना का परिवर्तन नहीं, बल्कि बदलती वैश्विक और राष्ट्रीय परिस्थितियों के बीच आत्ममंथन और नव-संकल्प का अवसर भी प्रस्तुत करता है। चैत्र नवरात्रों का पावन पर्व इस वर्ष ऐसे समय में आया है, जब विश्व युद्ध, आर्थिक अस्थिरता और सांस्कृतिक द्वंद्वों से जूझ रहा है। ऐसे दौर में भारत की सांस्कृतिक चेतना और आध्यात्मिक दृष्टि वैश्विक संतुलन के लिए एक वैकल्पिक मार्ग प्रस्तुत करती दिखाई देती है।

अयोध्या के पावन धाम में राष्ट्र मंदिर में श्री राम यंत्र की स्थापना केवल एक धार्मिक घटना नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पुनर्जागरण का प्रतीक है। यह उस भारत का संकेत है, जो अपनी जड़ों से जुड़कर आधुनिकता की ओर अग्रसर है। "रामराज्य" की परिकल्पना जहाँ न्याय, मर्यादा और लोककल्याण सर्वोपरि हों, आज के वैश्विक परिप्रेक्ष्य में सुशासन और मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना का एक आदर्श मॉडल बन सकती है।

वर्तमान समय में जब पश्चिम एशिया से लेकर यूरोप तक संघर्ष की स्थितियां बनी हुई हैं, वैश्विक अर्थव्यवस्था अनिश्चितताओं के दौर से गुजर रही है, तब भारत एक स्थिर और संतुलित शक्ति के रूप में उभर रहा है। "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भारतीय अवधारणा, जो हाल के वर्षों में वैश्विक मंचों पर बार-बार प्रतिध्वनित हुई है, आज केवल एक आदर्श नहीं, बल्कि आवश्यकता बनती जा रही है। भारत की यह विचारधारा संघर्ष की बजाय सह-अस्तित्व और सहयोग का मार्ग प्रशस्त करती है।

उत्तर प्रदेश का "उत्सव प्रदेश" के रूप में उभरना भी इसी व्यापक परिवर्तन का हिस्सा है। दीपोत्सव, काशी और अयोध्या के सांस्कृतिक आयोजन, और नवरात्रों की भव्यता ने न केवल सांस्कृतिक धरोहर को पुनर्जीवित किया है, बल्कि पर्यटन, रोजगार और स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी सशक्त किया है। यह मॉडल दर्शाता है कि संस्कृति और अर्थव्यवस्था परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हो सकते हैं।

वैश्विक स्वास्थ्य परिदृश्य में भी भारत की पारंपरिक ज्ञान प्रणालियां, विशेषकर आयुर्वेद, एक महत्वपूर्ण विकल्प के रूप में उभर रही हैं। महामारी के बाद पूरी दुनिया में प्राकृतिक और समग्र चिकित्सा पद्धतियों की ओर झुकाव बढ़ा है। भारत का यह ज्ञान-भंडार न केवल स्वास्थ्य के क्षेत्र में, बल्कि "सॉफ्ट पावर" के रूप में भी उसकी वैश्विक स्थिति को मजबूत कर रहा है।

इसी क्रम में "आत्मनिर्भर भारत" का संकल्प आज केवल आर्थिक नीति नहीं, बल्कि रणनीतिक आवश्यकता बन चुका है। वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में व्यवधान और भू-राजनीतिक तनावों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि आत्मनिर्भरता ही दीर्घकालिक स्थिरता का आधार है। भारत तकनीक, रक्षा, स्टार्टअप और नवाचार के क्षेत्रों में जिस गति से आगे बढ़ रहा है, वह उसे वैश्विक प्रतिस्पर्धा में एक सशक्त स्थान दिला रहा है।

खेल जगत में भारत की उपलब्धियां भी इस उभरते आत्मविश्वास का प्रतीक हैं। टी-20 विश्व कप में भारतीय टीम की विजय ने यह सिद्ध किया कि युवा ऊर्जा, अनुशासन और सामूहिक प्रयास से भारत किसी भी मंच पर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध कर सकता है। यह केवल खेल की जीत नहीं, बल्कि राष्ट्रीय मनोबल का उत्थान है।

नव संवत्सर 2083 का यह आरंभ हमें यह संदेश देता है कि आज का भारत केवल अपनी परंपराओं का संवाहक नहीं, बल्कि वैश्विक भविष्य का मार्गदर्शक बनने की क्षमता भी रखता है। परंपरा और प्रगति, आध्यात्म और विज्ञान, संस्कृति और अर्थव्यवस्था इन सभी का संतुलित समन्वय ही उस "नए भारत" की पहचान है, जो न केवल अपने लिए, बल्कि समूचे विश्व के लिए आशा और समाधान का केंद्र बन सकता है।

हरीश राणा इच्छामृत्यु मामला : करुणा और न्याय के बीच संतुलन

– डॉ. आभा सिंह, असिस्टेंट प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग महाराजा अग्रसेन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

11 मार्च 2026 का दिन भारतीय इतिहास में उस समय अविस्मरणीय बन गया जब सर्वोच्च न्यायालय ने देश में पहली बार किसी को इच्छामृत्यु की अनुमति दे दी। अपने ऐतिहासिक निर्णय में न्यायालय ने विगत 12 वर्षों से कोमा का संताप झेल रहे 32 वर्षीय हरीश राणा का जीवन रक्षक उपकरण हटाने की इजाजत दी जिससे उनका जीवन प्राकृतिक रूप से समाप्त हो जाएगा। परोक्ष इच्छामृत्यु के इस अभूतपूर्व निर्णय ने देश में एक नई बहस को जन्म दिया। देश भर में गंभीर बीमारी, असहनीय दर्द और लंबे इलाज से टूट चुके कई लोग इच्छामृत्यु के अधिकार की मांग करने लगे हैं।

यद्यपि सर्वोच्च न्यायालय की पाँच न्यायाधीशों की संविधान पीठ ने पूर्व में भी वर्ष 2018 में कॉमन कॉज के एक मामले में परोक्ष इच्छामृत्यु को मान्यता देते हुए किसी व्यक्ति के गरिमा के साथ मरने के अधिकार को मौलिक अधिकार माना था। संविधान पीठ ने यह माना कि गरिमा के साथ मरने का अधिकार, संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत जीवन के अधिकार का ही एक हिस्सा है। न्यायालय का मत था कि जो मरीज किसी असाध्य बीमारी से जूझ रहे हैं और जीवन–रक्षक उपकरणों पर निर्भर हैं, उन्हें अपना इलाज बंद करने की अनुमति दी जा सकती है।

हरीश राणा इच्छामृत्यु प्रकरण : संवेदनाओं और कानून का संगम : भारत में इच्छामृत्यु पर बहस कोई नई नहीं है, लेकिन हरीश राणा के मामले ने इस विषय को भावनात्मक, कानूनी और नैतिक तीनों स्तरों पर फिर से जीवंत कर दिया है। इसने समाज और न्यायपालिका के सामने सपाट सवाल रख दिया कि क्या केवल जीवन को बनाए रखना ही पर्याप्त है, या उसे गरिमा के साथ जीना और समाप्त करना अधिक महत्वपूर्ण है? चिकित्सकों के अनुसार उनके ठीक होने की संभावना नगण्य थी। इन्हीं हालात में परिवार और चिकित्सकों के सामने सबसे कठिन प्रश्न खड़ा हुआ कि क्या जीवन–रक्षक उपकरणों को जारी रखा जाए, या उन्हें हटाकर पीड़ा और निर्जीव अस्तित्व को समाप्त किया जाए।

प्रमुख न्यायिक पड़ाव : वर्ष 1996 में ज्ञान कौर बनाम पंजाब राज्य के एक मामले में न्यायलय ने जीवन के अधिकार को गरिमा से जोड़ा। 2011 में मुंबई के अरुणा शानबाग प्रकरण में कोर्ट ने निष्क्रिय इच्छामृत्यु को सीमित परिस्थितियों में अनुमति दी वहीं एक एनजीओ कॉमन कॉज बनाम भारत संघ के एक मामले में साल 2018 में "लिविंग विल" और गरिमामय मृत्यु को संवैधानिक मान्यता भी प्रदान की जा चुकी है। हरीश राणा का मामला इन्हीं सिद्धांतों की वास्तविक परीक्षा बनकर सामने आया।

"सर्वोत्तम हित" सिद्धांत : समाधान या उलझन? : जब कोई मरीज अपनी इच्छा व्यक्त नहीं कर सकता, तब न्यायालय "सर्वोत्तम हित" सिद्धांत अपनाता है। मरीज के लिए जीवन–रक्षक प्रणाली जारी रखना ही उसके हित में है, या उसे हटाना हितकर है, यह सवाल इस मामले में भी केंद्र में था।

गरिमा बनाम जैविक अस्तित्व : इस मामले ने एक मूल प्रश्न यह भी उठाया कि चेतना शून्य, संवादहीन और सुधार की नगण्य संभावना के बीच क्या केवल शरीर के जीवित रहने को ही जीवन माना जा सकता है। न्यायालय ने यह संकेत दिया कि जीवन–रक्षक उपकरणों को अनंत काल तक जारी रखना, कभी–कभी गरिमा के विपरीत भी हो सकता है।

भारतीय समाज में इसका प्रभाव : हरीश राणा का मामला व्यापक चर्चा को जन्म देता है। परिवार की भूमिका के स्तर पर देखा जाए तो ऐसे निर्णय का भावनात्मक बोझ तो था ही वहीं परिजनों को अपराधबोध और सामाजिक दबाव का सामना भी करना था। आईसीयू और दीर्घकालिक इलाज की लागत के आर्थिक पक्ष के आलोक में निर्णय के स्वतंत्र होने या मजबूरी होने पर भी सवाल थे। धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भारतीय समाज जीवन को ईश्वर की देन मानता है ऐसे में इच्छामृत्यु को नैतिक रूप से अस्वीकार्य ही माना जाता रहा है। स्वास्थ्य सेवाओं की दृष्टि से देखा जाए तो देश में आज भी इच्छामृत्यु के लिए आवश्यक पैलीएटिव केयर और दर्द प्रबंधन का अभाव है। इस मामले ने चिकित्सा क्षेत्र के सामने नई नैतिक चुनौतियों को जन्म दिया है।

भविष्य की दिशा : क्या बदल सकता है?– हरीश राणा मामला भारत के लिए एक संकेत है कि देश में एक स्पष्ट कानून की आवश्यकता है जिसमें इच्छामृत्यु पर एक व्यापक और सरल कानूनी ढाँचा सुस्पष्ट हो। साथ ही भारतीय जनमानस को लिविंग विल की जागरूकता से जोड़े जाने की भी आवश्यकता है जिससे लोग पहले से अपने निर्णय दर्ज कर सकें। स्वास्थ्य सेवाओं की दृष्टि से पैलीएटिव केयर का विस्तार करते हुए गरिमामय जीवन और मृत्यु दोनों सुनिश्चित किया जाना चाहिए। न्यायिक प्रक्रिया के हवाले से देखा जाए तो देश में आज भी असंख्य मरीज मौजूद हैं जो दशकों से न्यायालय की गुहार लगाते–लगाते टूट चुके हैं। ऐसे में न्यायिक प्रक्रिया का सरलीकरण करते हुए परिवारों को लंबी कानूनी प्रक्रिया से राहत मिलनी चाहिए।

संपूर्ण देश में हिन्दुत्व के समाचार

संकलन – डॉ. रामशंकर, सहायक प्राध्यापक, आईआईएमटी कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट, ग्रेटर नोएडा

20 फरवरी 2026 – दिल्ली विश्वविद्यालय में 'भारतीय सभ्यता अध्ययन केंद्र' को मंजूरी : दिल्ली विश्वविद्यालय प्रशासन ने 'भारतीय सभ्यता अध्ययन केंद्र' स्थापित करने का निर्णय लिया। केंद्र में प्राचीन इतिहास, दर्शन और संस्कृति पर शोध को बढ़ावा दिया जाएगा।

21 फरवरी 2026 – गौ संरक्षण कानून के सख्त पालन हेतु नई प्रवर्तन इकाइयाँ गठित : हरियाणा सरकार ने गौ संरक्षण कानून के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए विशेष प्रवर्तन इकाइयों का गठन किया। पुलिस और प्रशासन की संयुक्त टीमें अवैध परिवहन और कटान पर निगरानी रखेंगी। सरकार ने इसे सांस्कृतिक संरक्षण से जोड़ा, जबकि विपक्ष ने इसके दुरुपयोग और जमीनी स्तर पर निष्पादन को लेकर चिंता जताई।

गौ संरक्षण कानून

22 फरवरी 2026 – हेरिटेज टूरिज्म कॉरिडोर योजना को मंजूरी, 1500 करोड़ का निवेश : गुजरात सरकार ने प्राचीन मंदिरों और ऐतिहासिक स्थलों को जोड़ने के लिए 'हेरिटेज टूरिज्म कॉरिडोर' योजना शुरू की। 1500 करोड़ रुपये की इस परियोजना से पर्यटन, रोजगार और स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है। सरकार ने इसे सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था का नया मॉडल बताया है।

23 फरवरी 2026– मंदिर ट्रस्ट प्रबंधन में पारदर्शिता के लिए नई नीति लागू : राजस्थान सरकार ने मंदिर ट्रस्टों की आय और प्रबंधन को पारदर्शी बनाने के लिए नई नीति लागू की। इसके तहत ऑनलाइन ऑडिट, आय–व्यय का सार्वजनिक विवरण और डिजिटल निगरानी अनिवार्य की गई है। सरकार ने इसे भ्रष्टाचार रोकने की दिशा में कदम बताया, जबकि कुछ ट्रस्टों ने प्रशासनिक हस्तक्षेप पर आपत्ति जताई है।

24 फरवरी 2026 – कर्नाटक में मंदिर प्रबंधन विधेयक पर सियासी टकराव तेज : कर्नाटक सरकार द्वारा प्रस्तावित मंदिर प्रबंधन विधेयक को लेकर राजनीतिक विवाद गहरा गया है। सरकार ने पारदर्शिता और प्रशासनिक सुधार की बात कही है, जबकि हिन्दू संगठनों ने इसे सरकारी नियंत्रण बढ़ाने का प्रयास बताया। विधानसभा में विपक्ष ने भी विधेयक पर सवाल उठाए, जिससे मुद्दा राज्य की राजनीति का केंद्र बन गया है।

25 फरवरी 2026 – राष्ट्रीय 'संस्कृति संरक्षण कोष' बनाने की घोषणा : केंद्र सरकार ने प्राचीन मंदिरों, तीर्थ स्थलों और सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण के लिए 'संस्कृति संरक्षण कोष' बनाने की घोषणा की। इस कोष के तहत शोध, पुनर्निर्माण और संरक्षण परियोजनाओं को वित्तीय सहायता दी जाएगी।

26 फरवरी 2026 – संस्कृत और भारतीय भाषाओं के लिए 500 नए संस्थानों की योजना : शिक्षा मंत्रालय ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत संस्कृत और भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने के लिए 500 नए संस्थान खोलने की योजना पेश की। सरकार का कहना है कि इससे भारतीय भाषाई विरासत को सशक्त किया जाएगा, जबकि कुछ शिक्षाविदों ने संसाधन और गुणवत्ता को लेकर सवाल उठाए हैं।

27 फरवरी 2026 – शिवाजी जयंती को 'सांस्कृतिक गौरव दिवस' का दर्जा : महाराष्ट्र सरकार ने शिवाजी महाराज जयंती को आधिकारिक रूप से 'सांस्कृतिक गौरव दिवस' घोषित किया। स्कूलों और कॉलेजों में विशेष कार्यक्रम आयोजित करने के निर्देश दिए गए हैं।

28 फरवरी 2026 – केरल में मंदिर प्रशासन सुधार के लिए उच्चस्तरीय समिति गठित : केरल सरकार ने मंदिर प्रशासन और परंपराओं से जुड़े विवादों के समाधान के लिए उच्चस्तरीय समिति गठित की। समिति धार्मिक रीति–रिवाजों और आधुनिक प्रशासन के बीच संतुलन पर रिपोर्ट देगी।

1 मार्च 2026 – 'भारतीय संस्कृति ऐप' लॉन्च, डिजिटल प्लेटफॉर्म पर विरासत को बढ़ावा : केंद्र सरकार ने "भारतीय संस्कृति ऐप" लॉन्च किया, जिसमें देशभर के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और विरासत स्थलों की विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराई गई है। ऐप में बहुभाषीय सामग्री, वर्चुअल टूर और शैक्षणिक संसाधन शामिल हैं।

2 मार्च 2026 – चारधाम मार्ग पर अतिक्रमण हटाने के लिए विशेष अभियान शुरू : उत्तराखंड सरकार ने चारधाम यात्रा मार्ग पर अतिक्रमण हटाने के लिए राज्यव्यापी अभियान शुरू किया। प्रशासन ने कई अस्थायी निर्माण हटाए और सख्त निर्देश जारी किए। सरकार का दावा है कि इससे तीर्थयात्रियों की सुरक्षा और यातायात सुगम होगा, जबकि स्थानीय व्यापारियों ने आजीविका पर असर की चिंता जताई है।

3 मार्च 2026 – मथुरा क्षेत्र में संवेदनशील स्थलों पर हाई-टेक

सुरक्षा व्यवस्था लागू : मथुरा में धार्मिक और ऐतिहासिक स्थलों के आसपास सुरक्षा बढ़ाते हुए सीसीटीवी, ड्रोन और एआई आधारित निगरानी प्रणाली लागू की गई। प्रशासन ने संवेदनशील क्षेत्रों को चिन्हित कर अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किया है।

4 मार्च 2026 – गौ आधारित अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए नई योजना पर काम : केंद्र सरकार ने गौ आधारित उत्पादों और जैविक खेती को प्रोत्साहित करने के लिए नई योजना पर काम शुरू किया। डेयरी, गोबर गैस और ऑर्गेनिक फर्टिलाइजर को आर्थिक मॉडल से जोड़ने की तैयारी है। सरकार ने इसे ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत करने का माध्यम बताया, जबकि विशेषज्ञों ने व्यावहारिकता पर सवाल उठाए हैं।

5 मार्च 2026 – अयोध्या को वैश्विक धार्मिक पर्यटन केंद्र बनाने की योजना तेज : अयोध्या में बुनियादी ढांचे के विकास के लिए नई परियोजनाओं को मंजूरी दी गई। इसमें होटल, सड़क और परिवहन सुविधाओं का विस्तार शामिल है। सरकार का लक्ष्य इसे अंतरराष्ट्रीय धार्मिक पर्यटन केंद्र के रूप में स्थापित करना है, जिससे निवेश और रोजगार में वृद्धि हो सके।

6 मार्च 2026 – भारतीय परंपराओं को शिक्षा से जोड़ने पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में जोर : दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में नीति निर्माताओं और शिक्षाविदों ने भारतीय संस्कृति और परंपराओं को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में शामिल करने की वकालत की। वक्ताओं ने कहा कि इससे छात्रों में सांस्कृतिक जागरूकता बढ़ेगी, हालांकि कुछ विशेषज्ञों ने संतुलित पाठ्यक्रम की आवश्यकता पर जोर दिया।

अयोध्या को वैश्विक धार्मिक पर्यटन केंद्र बनाने की योजना तेज

7 मार्च 2026 – हरिद्वार में गंगा किनारे अवैध निर्माण पर प्रशासन की बड़ी कार्रवाई : हरिद्वार में गंगा तट के आसपास अवैध निर्माण के खिलाफ प्रशासन ने व्यापक अभियान चलाया। कई अतिक्रमण हटाए गए और नोटिस जारी किए गए। अधिकारियों ने कहा कि यह कार्रवाई नदी की पवित्रता और पर्यावरण संरक्षण के लिए जरूरी है, जबकि प्रभावित लोगों ने पुनर्वास की मांग उठाई।

8 मार्च 2026 – सांस्कृतिक संस्थानों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए नई पहल : महिला दिवस के अवसर पर केंद्र और राज्य सरकारों ने सांस्कृतिक और धार्मिक संस्थानों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए योजनाएं शुरू कीं। प्रशिक्षण और नेतृत्व कार्यक्रमों की घोषणा की गई। सरकार ने इसे सामाजिक सुधार से जोड़ा, जबकि कुछ संगठनों ने परंपरागत ढांचे में बदलाव पर मिश्रित प्रतिक्रिया दी है।

9 मार्च 2026 – चारधाम यात्रा के लिए डिजिटल पंजीकरण शुरू, पहले दिन भारी प्रतिक्रिया : उत्तराखंड सरकार ने चारधाम यात्रा 2026 के लिए ऑनलाइन पंजीकरण प्रक्रिया शुरू की। पहले ही दिन दो लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने आवेदन किया, जिससे पोर्टल पर तकनीकी दबाव बढ़ा। प्रशासन ने अतिरिक्त सर्वर क्षमता बढ़ाने की घोषणा की है।

10 मार्च 2026 – होलिका दहन पर पर्यावरण दिशा-निर्देश जारी, प्रशासन सख्त : केंद्र और राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्डों ने होलिका दहन को लेकर नए दिशा–निर्देश जारी किए। लकड़ी के सीमित उपयोग और प्रदूषण नियंत्रण पर जोर दिया गया है। प्रशासन ने उल्लंघन पर कार्रवाई की चेतावनी दी।

11 मार्च 2026 – ब्रज क्षेत्र में लठमार होली के दौरान हाई-टेक निगरानी लागू : वृंदावन और बरसाना में लठमार होली के दौरान पहली बार बड़े स्तर पर ड्रोन और एआई आधारित निगरानी प्रणाली लागू की गई। प्रशासन ने पांच लाख से अधिक पर्यटकों की भीड़ को नियंत्रित करने के लिए 3000 से अधिक सुरक्षाकर्मी तैनात किए।

12 मार्च 2026 – मंदिरों में डिजिटल भुगतान को बढ़ावा, क्यूआर आधारित दान प्रणाली लागू : देशभर के प्रमुख मंदिरों में डिजिटल दान प्रणाली लागू करने की पहल तेज हुई। 10 राज्यों के 500 से अधिक मंदिरों में क्यूआर कोड आधारित भुगतान शुरू किया गया। सरकार ने इसे पारदर्शिता और नकदी रहित अर्थव्यवस्था से जोड़ा, जबकि कुछ ट्रस्टों ने तकनीकी ढांचे को लेकर चिंता जताई है।

13 मार्च 2026 – भारतीय इतिहास और संस्कृति पर राष्ट्रीय पुस्तक अभियान शुरू : केंद्र सरकार ने भारतीय इतिहास, परंपरा और संस्कृति पर आधारित साहित्य को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय अभियान शुरू किया। स्कूलों और पुस्तकालयों में एक लाख से अधिक पुस्तकों का वितरण किया गया।

14 मार्च 2026 – अयोध्या में धार्मिक पर्यटन उछाल, नई परियोजनाओं को मंजूरी : अयोध्या में बढ़ती पर्यटक संख्या को देखते हुए राज्य सरकार ने होटल, परिवहन और शहरी विकास से जुड़ी नई परियोजनाओं को मंजूरी दी। निवेश प्रस्तावों में तेजी आई है। प्रशासन का दावा है कि इससे रोजगार के अवसर बढ़ेंगे, जबकि शहरी दबाव और संसाधनों पर प्रभाव को लेकर विशेषज्ञों ने चिंता जताई है।

15 मार्च 2026 – होली पर सुरक्षा व्यवस्था की समीक्षा, अधिकांश राज्यों में स्थिति सामान्य : गृह मंत्रालय ने होली 2026 के दौरान सुरक्षा व्यवस्था की समीक्षा रिपोर्ट जारी की। रिपोर्ट के अनुसार देशभर में त्योहार शांतिपूर्ण रहा और कोई बड़ी अप्रिय घटना सामने नहीं आई। प्रशासन ने बेहतर समन्वय और तकनीकी निगरानी को इसका कारण बताया।

एग्रीगेटर कंपनियों पर होगा सरकार का सीधा नियंत्रण

प्रदेश में ऐप आधारित टैक्सी सेवाओं को लेकर सरकार ने बड़ा कदम उठाया है। राज्य के परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह ने बताया कि अब तक Ola और Uber जैसी एग्रीगेटर कंपनियों पर सरकार का सीधा नियंत्रण नहीं था। कई मामलों में यह स्पष्ट नहीं हो पाता था कि वाहन कौन चला रहा है और चालक का पिछला रिकॉर्ड क्या है। यात्रियों की सुरक्षा और परिवहन व्यवस्था में पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए राज्य सरकार ने Motor Vehicles Act, 1988 की धारा 93 तथा 1 जुलाई 2025 को केंद्र सरकार द्वारा संशोधित एग्रीगेटर नियमों को प्रदेश में लागू करने का निर्णय लिया है। कैबिनेट के इस फैसले के बाद अब किसी भी एग्रीगेटर कंपनी की टैक्सी परिचालन से पहले कई अनिवार्य प्रक्रियाओं का पालन करना होगा। सबसे पहले कंपनियों को उत्तर प्रदेश सरकार के पास अपना पंजीकरण कराना होगा। इसके साथ ही हर ड्राइवर का पुलिस वेरिफिकेशन कराना अनिवार्य किया गया है ताकि उसके आपराधिक या संदिग्ध रिकॉर्ड की पूरी जानकारी उपलब्ध रहे। इसके अलावा ड्राइवरों का नियमित मेडिकल परीक्षण और वाहनों का फिटनेस टेस्ट भी कराया जाएगा, जिससे यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद पर पोक्सो एक्ट के तहत मामला दर्ज

स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती से जुड़ा एक गंभीर मामला प्रयागराज में सामने आया है। अदालत के आदेश के बाद उनके तथा उनके शिष्य मुकुंदानंद ब्रह्मचारी के खिलाफ पोक्सो अधिनियम और भारतीय न्याय संहिता की विभिन्न धाराओं में प्राथमिकी दर्ज की गई है। यह मुकदमा झूंसी थाने में अपराध संख्या 58/2026 के रूप में दर्ज किया गया है। उन पर लगे आरोप नाबालिग शिष्यों के साथ कथित यौन शोषण से जुड़े हैं, जिन्हें गंभीर श्रेणी का अपराध माना जाता है। शिकायत में कहा गया है कि 13 जनवरी 2025 से 15 फरवरी 2026 के बीच दो शिष्यों के साथ यौन उत्पीड़न की घटनाएं हुईं। इनमें एक बालिग और एक नाबालिग बताया गया है। शिकायतकर्ता आशुतोष ब्रह्मचारी के पास पहुंचे दोनों शिष्यों ने आरोप लगाया कि स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद और मुकुंदानंद ब्रह्मचारी ने उनके साथ अनुचित व्यवहार किया और उनका शोषण किया। शिकायत में यह भी आरोप लगाया गया है कि वर्ष 2025 के कुंभ मेले और 2026 के माघ मेले के दौरान लगाए गए शिविरों में भी कथित घटनाएं हुईं। आरोप के अनुसार माघ मेले के समय शिविर परिसर के अलावा शिविर के बाहर खड़ी एक गाड़ी में भी शोषण की घटनाएं हुईं। पुलिस आयुक्त की रिपोर्ट और उपलब्ध डिजिटल साक्ष्यों के बाद प्रथम दृष्टया गंभीर अपराध के संकेत मिलते हैं, इसलिए विस्तृत जांच आवश्यक है।

सलीम वास्तिक पर हमले में पाकिस्तानी कनेक्शन

यूट्यूबर और खुद को एक्स-मुस्लिम बताने वाले सलीम वास्तिक पर जानलेवा हमला करने वाले दो भाई जीशान और गुलफाम, गाजियाबाद पुलिस के साथ मुठभेड़ में ढेर हो चुके हैं। पुलिस जांच में अब यह बात सामने आ रही है कि ये दोनों भाई केवल सेल्फ रेडिकलाइज्ड नहीं थे बल्कि इनके पीछे एक गहरी साजिश और नेटवर्क काम कर रहा था। यूपी पुलिस को पश्चिमी उत्तर प्रदेश और दिल्ली के एक संदिग्ध मौलाना का सुराग मिला है जो संभवतः इनका हैंडलर था। दोनों भाई पाकिस्तान से संचालित एक टेलीग्राम ग्रुप 'मुस्लिम आर्मी मेहंदी मॉडरेटर' के संपर्क में थे। जांच में हमलावरों के दो बैंक खातों का भी पता चला है जिनमें संदिग्ध लेन-देन पाया गया है। इससे संकेत मिलता है कि उन्हें इस हमले के लिए लगातार फंड मुहैया कराया जा रहा था। एनकाउंटर के बाद हमलावरों के पिता ने इसे 'धर्म का काम' बताते हुए किसी भी पछतावे से इनकार किया जो कट्टरपंथी सोच की गहराई को दर्शाता है।

उत्सवों का प्रदेश उत्तर प्रदेश

कभी बीमारू राज्य कहे जाने वाले उत्तर प्रदेश को अब न केवल भारत मे बल्कि विदेशों में उत्तम प्रदेश के नाम से पुकारा जाता है। उत्तम प्रदेश में सतत विकास, ठोस परिवर्तन, व सदा उत्सव जैसा वातावरण होने से उत्तर प्रदेश को उत्सव प्रदेश की संज्ञा दी जाने लगी है।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जब जापान की धरती पर कहते है कि 'यू.पी में अब ना कोई कर्फ्यू ना कोई दंगा अब यूपी में सब चंगा' यह उनका मात्र एक कथन नही बल्कि कथन कों वास्तविक धरातल पर चरितार्थ भी करने का कार्य भी करता है। उत्तर प्रदेश अपने उत्तम प्रदेश व फिर उत्सव प्रदेश की यात्रा पर नव निर्माण के 9 वर्ष पूर्ण कर चुका है। उत्तर प्रदेश में अभूतपूर्व विकास एवं सतत समृद्धि पर नवरात्र प्रारम्भ व नवसंवत्सर आरम्भ से ठीक एक दिन पहले उत्तर प्रदेश उत्सव प्रदेश की थीम पर आधारित लघु फिल्म जिसमे उत्तर प्रदेश के 9 वर्षों के सतत विकास एवं समृद्धि को दर्शाया गया है का प्रदर्शन लोकभावना समागार लखनऊ में किया गया।

उत्तर प्रदेश सरकार ने सांस्कृतिक पुर्नजागरण, सुदृढ़ कानून व्यवस्था, शासन व्यवस्था में अभूतपूर्व सुधार, परिवर्तन कारी विकास, युवा शक्ति व रोजगार सृजन, औद्योगिक विकास एवं निवेश, महिला सुरक्षा व सशक्तिकरण ,कृषि समृद्धि एवं पर्यटन व एमएसएमई के क्षेत्र में ठोस कदम उठाकर यह सिद्ध कर दिया है कि उत्तर प्रदेश का अब स्वर्ण युग चल रहा जो समृद्धि के नवयुग की ओर संकेत करता है।

प्रत्येक उत्तर प्रदेश वासी को व वर्तमान सरकार व मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ पर गर्व होना चाहिए। व यह डॉक्यूमेंट्री सभी की देखनी चाहिए।

मेरठ में देश की सबसे तेज गति वाली मेट्रो सेवा शुरू

मेरठ में देश की सबसे तेज गति वाली मेट्रो सेवा शुरू हो गई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 22 फरवरी 2026 को मेरठ मेट्रो रेल परियोजना का उद्घाटन किया। यह परियोजना शहर की परिवहन व्यवस्था को मजबूत बनाने और क्षेत्रीय कनेक्टिविटी बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है। इस मेट्रो सेवा का संचालन और रखरखाव National Capital Region Transport Corporation द्वारा किया जा रहा है। मेरठ मेट्रो मेरठ साउथ से मोदीपुरम के बीच चलेगी तथा 23 किलोमीटर की दूरी को 30 मिनट में पूरा करेगी। मेट्रो की अधिकतम डिजाइन स्पीड 135 किलोमीटर प्रति घंटा है, किंतु फिलहाल इसे 120 किलोमीटर प्रति घंटा की गति से चलाया जा रहा है। मेट्रो सेवा प्रतिदिन सुबह 6 बजे से रात 10 बजे तक उपलब्ध रहेगी और हर 10 मिनट के अंतराल पर ट्रेनें चलेंगी। इससे मेरठ से दिल्ली और नोएडा की यात्रा करने वाले हजारों यात्रियों को बेहतर सुविधा मिलेगी। मेरठ मेट्रो कुल 13 स्टेशनों पर रुकेगी। इनमें मेरठ साउथ, परतापुर, रिठानी, शताब्दी नगर, ब्रह्मपुरी, मेरठ सेंट्रल, भैसाली, बेगमपुल, एमईएस कॉलोनी, दौराला, मेरठ नॉर्थ, मोदीपुरम और मोदीपुरम डिपो शामिल हैं। नई मेट्रो सेवा से मेरठ और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के बीच आवागमन अधिक तेज, सुविधाजनक और आधुनिक होने की उम्मीद जताई जा रही है।

नोएडा हवाई अड्डे को उड़ान संचालन की अनुमति

जेवर में निर्माणाधीन Noida International Airport को अब उड़ान संचालन के लिए आधिकारिक अनुमति मिल गई है। Directorate General of Civil Aviation द्वारा हवाई अड्डे को एयरोड्रम लाइसेंस जारी किया गया है। इस अनुमति के साथ ही यहां से नियमित हवाई सेवाएँ शुरू होने का मार्ग लगभग पूरी तरह साफ हो गया है। यह उपलब्धि इस बात का संकेत है कि हवाई अड्डे का आधारभूत ढांचा, सुरक्षा प्रबंध तथा संचालन व्यवस्था अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप तैयार हो चुकी है। इससे पहले हवाई अड्डे की सुरक्षा व्यवस्था का भी परीक्षण किया गया था। Bureau of Civil Aviation Security ने सुरक्षा व्यवस्था, आपातकालीन योजनाओं और विमान अपहरण जैसी परिस्थितियों से निपटने की तैयारियों का मूल्यांकन करने के बाद अपनी स्वीकृति प्रदान की है। अधिकारियों के अनुसार, इस सुरक्षा मंजूरी के बाद ही उड़ान संचालन की अंतिम अनुमति प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त हुआ है। अधिकारियों ने बताया कि हवाई अड्डे का अधिकांश निर्माण कार्य पूरा हो चुका है। शेष व्यवस्थाओं और आवश्यक तैनाती को पूरा करने में लगभग डेढ़ महीने का समय लग सकता है। इसके बाद यहां से नियमित यात्री विमानों का संचालन आरंभ किया जा सकेगा।

हरकी पैड़ी और कुंभ क्षेत्र में गैर हिंदुओं के प्रवेश पर निर्णय लेगी सरकार

उत्तराखंड में धार्मिक स्थलों पर गैर-हिन्दुओं के प्रवेश को लेकर चल रही बहस के बीच मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने स्पष्ट किया है कि इस विषय पर सरकार जल्दबाज़ी में कोई निर्णय नहीं लेगी। उन्होंने कहा कि साधु-संतों, तीर्थ पुरोहितों और संबंधित धार्मिक संगठनों से विस्तृत विचार-विमर्श करने के बाद ही अंतिम फैसला लिया जाएगा। हरिद्वार में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार सभी पक्षों की भावनाओं और सुझावों का सम्मान करती है। यदि किसी धार्मिक स्थल की परंपरा या नियमों के संबंध में कोई प्रस्ताव आता है तो उस पर संवैधानिक और सामाजिक दृष्टि से विचार किया जाएगा। सरकार का उद्देश्य धार्मिक आस्था की मर्यादा बनाए रखना और सामाजिक सौहार्द को सुरक्षित रखना है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने आगामी अर्धकुंभ मेला की तैयारियों का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि मेले को भव्य और दिव्य बनाने के लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएँ की जा रही हैं, ताकि श्रद्धालुओं को बेहतर सुविधाएँ मिल सकें और आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हो सके।

देव संस्कृति विवि के छात्र अभिषेक ने बनाया वर्ल्ड रिकॉर्ड

विवि के योग विभाग से मिली जानकारी के अनुसार 22 जनवरी 2026 को 'लंदन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड' की ओर से एक ऑनलाइन स्पर्धा का आयोजन किया गया था। इसमें छात्र अभिषेक कुमार ने प्रतिभागी बन कर नया कीर्तिमान स्थापित किया।

लंदन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में अभिषेक कुमार का नाम दर्ज होने से क्षेत्र में खुशी और गर्व का माहौल है। अभिषेक कुमार संस्कृति विश्वविद्यालय के बीएससी (योग विज्ञान) प्रथम वर्ष के छात्र हैं। उन्होंने अपनी असाधारण एकाग्रता और शारीरिक क्षमता के बल पर यह उपलब्धि हासिल की है। योग विज्ञान विभाग से मिली जानकारी के अनुसार, अभिषेक ने 22 जनवरी 2026 को आयोजित एक विशेष प्रतियोगिता में 331 सूर्य नमस्कार पूरे कर नया कीर्तिमान स्थापित किया। यह उपलब्धि पहले के रिकॉर्ड से भी आगे रही। बताया गया कि इससे पहले योग क्षेत्र में कई प्रतिभागियों ने रिकॉर्ड बनाने की कोशिश की थी, लेकिन अभिषेक ने अपनी मेहनत और निरंतर अभ्यास से यह सफलता प्राप्त की। इस उपलब्धि के बाद विश्वविद्यालय परिवार में उत्साह का माहौल है। विश्वविद्यालय के कुलाधिपति ने अभिषेक को प्रमाणपत्र प्रदान कर सम्मानित किया और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने कहा कि अभिषेक की यह सफलता युवाओं के लिए प्रेरणादायक है और यह दर्शाती है कि अनुशासन, समर्पण और कड़ी मेहनत से कोई भी लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।

अभिषेक कुमार ने अपनी सफलता का श्रेय अपने गुरुजनों, परिवार और विश्वविद्यालय के सहयोग को दिया। उन्होंने कहा कि नियमित अभ्यास और सकारात्मक सोच के कारण ही यह उपलब्धि संभव हो सकी। उनकी यह उपलब्धि न केवल विश्वविद्यालय बल्कि पूरे क्षेत्र के लिए गर्व का विषय बन गई है।

अयोध्या के राष्ट्रमंदिर में श्री रामयंत्र की स्थापना रामराज्य का संकेत

चैत्र नवरात्रि के प्रथम दिवस एवं सनातन नव संवत्सर विक्रम संवत २०८३ के पावन अवसर मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्री राम की पावन नगरी आयोध्या में श्री राम जन्मभूमि मंदिर में पूज्य संतों की उपस्थिति में महिला सशक्तिकरण की सशक्त हस्ताक्षर भारत गणराज की महा माहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु जी के करकमलों से श्री राम यत्र की विधिवत प्रतिस्थापना की गई। प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी ने प्रभु श्री राम को याद करते हुए कहा कि – **जद्यपि सब बैकुंठ बखाना। बेद पुरान बिदित जगु जाना।।**

अवधपुरी सम प्रिय नहिं सोऊ। यह प्रसंग जानइ कोउ कोऊ।।

नव संवत्सर (विक्रम संवत–२०८३) के पुण्य अवसर पर आज श्री राम जन्मभूमि मंदिर, श्री अयोध्या धाम में पूज्य साधु–संतों के पावन सान्निध्य में मा. राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु जी के कर–कमलों से 'श्रीराम यंत्र' की प्रतिष्ठापना सनातन चेतना का दिव्य स्पंदन है। यह प्रतिष्ठापन आस्था का आलोक है। यह अवसर 'रामराज्य' की अनुभूति है। इस पुण्य आयोजन में मा. राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल जी, आध्यात्मिक विदुषी पूज्य माता अमृतानंदमयी जी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य आदरणीय श्री सुरेश 'भैयाजी' जोशी, श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष पूज्य स्वामी गोविंद देव गिरी जी, पूज्य साधु–संतों एवं आध्यात्मिक विभूतियों की आत्मीय एवं गरिमामयी उपस्थिति ने इस क्षण को और अधिक स्मरणीय व पावन बना दिया।

भारत के 'राष्ट्रमंदिर' निर्माण के महायज्ञ से जुड़े सभी पूज्य संत गणों तथा कर्मयोगियों का हार्दिक अभिनंदन एवं श्री राम जन्मभूमि आंदोलन में अपने प्राणों का बलिदान देने वाले सभी रामभक्तों की स्मृतियों को नमन। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की उपस्थिति में अयोध्या के राम मंदिर की दूसरी मंजिल पर लगभग 150 किलोग्राम वजनी और पांच धातुओं (पंच धातुओं) से निर्मित, 24 कैरेट सोने की ऊपरी परत वाले 3 फीट चौड़े और 3 फीट लंबे श्री राम यंत्र की स्थापना की गई। राम यंत्र एक सूक्ष्म रूप से विस्तृत आरेख है जिस पर जटिल धार्मिक आकृतियाँ उकेरी गई हैं, जिनमें कई परस्पर जुड़े त्रिकोण, सटीक त्रिकोणमितीय संरेखण और पारंपरिक शिल्प शास्त्र सिद्धांतों के अनुसार डिजाइन किए गए संकेंद्रित पैटर्न शामिल हैं।

सूत्रों के अनुसार, ये ज्यामितीय आकृतियाँ, साथ ही संरचना के भीतर अंकित देवनागरी लिपि में पवित्र शिलालेख, दिव्य ऊर्जा के संचार का माध्यम माने जाते हैं, जिससे मंदिर के भीतर एक आध्यात्मिक रूप से ऊर्जावान और सामंजस्यपूर्ण वातावरण बनता है।

रामलला के 'सूर्य तिलक' की जिम्मेदारी CBRI रुड़की को

श्री अयोध्या धाम (उत्तर प्रदेश) में राम नवमी के अवसर पर प्रभु रामलला के मस्तक पर होने वाला भव्य 'सूर्य तिलक' कार्यक्रम अब प्रति वर्ष वैज्ञानिक तरीके से संचालित किया जाएगा। इसके संचालन की जिम्मेदारी केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (CBRI), रुड़की को दी जाएगी। इसके लिए श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट और CBRI के बीच 10 वर्षों का अनुबंध किया जा रहा है। यह जानकारी राम मंदिर निर्माण समिति के चेयरमैन नृपेंद्र मिश्र ने दो दिवसीय बैठक के बाद दी। उन्होंने बताया कि सूर्य की किरणों से होने वाले इस तिलक की व्यवस्था को त्रुटिहीन बनाए रखने के लिए उसी संस्था को जिम्मेदारी सौंपी जा रही है जिसने इस तकनीक को विकसित किया है। उन्होंने बताया कि मंदिर परिसर में स्थित अन्य 15 मंदिरों में आम श्रद्धालुओं के दर्शन 19 मार्च को आयोजित राष्ट्रपति कार्यक्रम के बाद शुरू कर दिए जाएंगे। एक समय में अधिकतम 1000 श्रद्धालुओं को प्रवेश की अनुमति होगी और सुरक्षा कारणों से पास प्रणाली लागू की जाएगी। नव संवत्सर के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू लगभग चार घंटे तक मंदिर परिसर में रहेंगी। इस दौरान वे मंदिर के दूसरे तल के गर्भगृह में राम रक्षा यंत्र की स्थापना करेंगी। साथ ही मंदिर निर्माण में योगदान देने वाले करीब 400 श्रमिकों और तकनीकी कर्मचारियों को सम्मानित किये जाने पर भी विचार किया गया।

इसके अलावा मंदिर परिसर में बन रहे अंतरराष्ट्रीय रामकथा संग्रहालय का निर्माण कार्य सितंबर तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। संग्रहालय में 20 गैलरियां बनाई जा रही हैं, जिनमें से एक विशेष गैलरी हनुमान जी को समर्पित होगी। इस गैलरी का निर्माण आईआईटी चेन्नई की टीम द्वारा किया जा रहा है, जिसमें 3D तकनीक के माध्यम से 12 मिनट की प्रस्तुति दिखाई जाएगी। मंदिर परिसर से जुड़े अन्य निर्माण कार्यों को 30 अप्रैल तक पूरा करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

भारतीय ज्ञान परम्परा के पुनर्जागरण विषयक विविध समाचार

- डॉ. प्रवीण सत्येन्द्र विद्यालंकार, लेखिका व साहित्यकार एवं वैदिक दर्शन विशेषज्ञ

भारतीय ज्ञान परम्परा को उसकी मूल सांस्कृकिक चेतना से जोड़ने तथा समकालीन शिक्षा से सम्न्वित करने के उद्देश्य से गत माह देश के विभिन्न प्रांतों में विविध कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन आयोजनों का मूल उद्देश्य शिक्षा को भारतीय दृष्टि, संस्कार और राष्ट्रबोध से समृद्ध करना रहा।

12 फरवरी, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)- डी.ए.वी. कॉलेज आर्य नगर में ''भारतीय ज्ञान परम्परा के सन्दर्भ में राष्ट्र जागरण एवं महर्षि दयानन्द पर विचार गोष्ठी आयोजित हुई जिसमें वक्ताओं ने महर्षि दयानन्द एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति के आलोक में भारतीय ज्ञान प्रणाली को शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर नव राष्ट्र नव जागरण हेतु प्रतिष्ठित करने की आवश्यकता पर बल दिया।

18 फरवरी, वाराणसी (उत्तर प्रदेश) - शिक्षा, संस्कृति उत्थान न्यास द्वारा आयोजित कार्यशाला में वैदिक गणित, भारतीय इतिहास दृष्टि और संस्कृति आधारित शिक्षण पद्धति पर सार्थक चर्चा हुई।

21 फरवरी, (नई दिल्ली)- शिक्षाविदों की बैठक में भारतीय भाषाओं तथा भारतीय ज्ञान प्रणाली को शिक्षा के केन्द्र में स्थापित करने की आवश्यकता रेखांकित की गई।

24 फरवरी, भोपाल (मध्य प्रदेश) में आयोजित संगोष्ठी में गुरुकुल परंपरा, भारतीय दर्शन और संस्कार आधारित शिक्षा के महत्व पर विचार वयक्त किए गए।

1 मार्च, हरिगढ़, (उत्तर प्रदेश) में आयोजित विराट हिन्दू सम्मेलन में ''भारतीय ज्ञान प्रणाली एवं राष्ट्र निर्माण में नारियों एवं हिन्दुओं के समक्ष चुनौतियाँ तथा योगदान'' विषय पर वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए। इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या मातृशक्ति एवं युवा उपस्थित थे। भारतीय ज्ञान परम्परा के सन्दर्भ में राष्ट्र की संस्कृति की रक्षा हेतु हरिगढ़ में कुल 46 हिन्दु सम्मेलनों का आयोजन हुआ।

2 मार्च, जयपुर (राजस्थान) तथा 5 मार्च, पुणे (महाराष्ट्र) - शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए आयोजित संवाद कार्यक्रमों में भारतीय दर्शन, योग और आयुर्वेद जैसे विषयों को शिक्षा से जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया गया।

9 मार्च, पटना (बिहार)- आयोजित कार्यक्रम में भारतीय संस्कृति, इतिहास और राष्ट्रबोध पर केंद्रित संवाद हुआ।

अंततः इस कार्यक्रमों में यह स्पष्ट रूप से प्रतिपादित किया गया कि भारतीय ज्ञान परंपरा केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की शिक्षा का आलोक है। शिक्षा के माध्यम से इस चेतना को समाज के प्रत्येक स्तर तक पहुंचाने का संकल्प वयक्त किया गया। भारतीय ज्ञान परम्परा की यह पुनर्जागरण यात्रा केवल शिक्षा के परिवर्तन की नहीं, बल्कि राष्ट्र की सांस्कृतिक चेतना, संस्कारों, एवं नैतिक मूल्यों को पुनः जागृत करने की एक व्यापक और सतत साधना है।

उत्तर प्रदेश का बहुचर्चित मोनालिसा प्रकरण

भावनाओं, अपेक्षाओं और सामाजिक वास्तविकताओं का विश्लेषण

हाल के समय में चर्चा में आया मोनालिसा प्रकरण कई सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक प्रश्नों को जन्म देता है। यह घटना केवल दो व्यक्तियों के संबंधों या उनके निजी निर्णयों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें समाज की अपेक्षाएँ, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, सामाजिक संरचनाएँ तथा मीडिया की भूमिका भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

बताया जाता है कि एक अत्यंत अभावग्रस्त पृष्ठभूमि से आने वाली एक युवती महाकुंभ के अवसर पर माला बेचते हुए दिखाई दी। उसका एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ और देखते-ही-देखते वह चर्चा का विषय बन गई। कुछ ही समय में लोग उसे पहचानने लगे और एक साधारण जीवन जीने वाली युवती अचानक सार्वजनिक ध्यान के केंद्र में आ गई। समाज के कुछ लोगों ने उसकी प्रतिभा और परिस्थितियों को देखते हुए उसके जीवन को बेहतर बनाने के प्रयास भी किए। इसी क्रम में एक फिल्म निर्माता द्वारा उसे लेकर फिल्म निर्माण की पहल भी की गई।

हाल ही में वह जिस कारण से पुनः चर्चा में आई है, वह है उसका एक मुस्लिम युवक से विवाह करना। सामान्यतः विवाह किसी भी व्यक्ति का व्यक्तिगत निर्णय होता है और भारतीय समाज तथा संविधान दोनों ही व्यक्ति को यह स्वतंत्रता देते हैं कि वह अपने जीवनसाथी का चयन अपनी इच्छा से करें। इसलिए इस निर्णय को व्यक्तिगत अधिकार के रूप में भी देखा जा सकता है।

फिर भी इस घटना के संदर्भ में कुछ प्रश्न समाज में स्वाभाविक रूप से उठते हैं। जब कोई व्यक्ति अचानक सामाजिक या आर्थिक रूप से ऊपर उठता है, तो उसके आसपास अनेक प्रकार के प्रभाव और हित समूह सक्रिय हो सकते हैं। ऐसे में यह भी चर्चा का विषय बन जाता है कि कहीं उसके निर्णयों के पीछे किसी प्रकार का बाहरी प्रभाव या स्वार्थ तो काम नहीं कर रहा। कुछ लोग इस संदर्भ में "लव जिहाद" जैसे विवादित विमर्श का उल्लेख भी करते हैं, यद्यपि इस प्रकार के आरोपों की सत्यता का निर्धारण केवल तथ्यात्मक जांच से ही संभव है।

इस पूरे प्रकरण का एक महत्वपूर्ण पहलू मीडिया और सार्वजनिक विमर्श भी है। डिजिटल युग में किसी भी घटना को बहुत तेजी से सामाजिक और राजनीतिक अर्थ मिल जाते हैं।

दूसरी ओर यह भी संभव है कि यह विवाह केवल दो व्यक्तियों का निजी निर्णय हो और इसे सामाजिक समरसता या व्यक्तिगत स्वतंत्रता के उदाहरण के रूप में भी देखा जाए। इसलिए किसी भी निष्कर्ष पर पहुँचने से पहले संतुलित दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है।

अंततः कहा जा सकता है कि मोनालिसा प्रकरण केवल एक व्यक्ति या एक निर्णय की कहानी नहीं है, बल्कि यह उस जटिल सामाजिक परिस्थिति को भी दर्शाता है जिसमें व्यक्तिगत आकांक्षाएँ, सामाजिक अपेक्षाएँ और सार्वजनिक विमर्श एक-दूसरे से टकराते दिखाई देते हैं। ऐसी घटनाओं को समझने के लिए भावनात्मक प्रतिक्रिया से अधिक तथ्यों, संवेदनशीलता और विवेकपूर्ण विश्लेषण की आवश्यकता होती है।

समय के साथ ही वास्तविकता अधिक स्पष्ट होती है। फिलहाल यही कामना की जा सकती है कि मोनालिसा का वैवाहिक जीवन सुखद, सुरक्षित और सम्मानपूर्ण हो तथा समाज भी इस घटना से संतुलित और परिपक्व दृष्टिकोण विकसित करने की प्रेरणा ले।

कुंभ फेम मोनालिसा की शादी के सम्बन्ध में बोले पिता

कुंभ मेले से चर्चा में आई मोनालिसा और फरमान खान की शादी इस वक्त पूरे देश में चर्चा का विषय बनी हुई है। दोनों ने केरल में जाकर शादी कर ली है तथा प्रेस कॉन्फ्रेंस कर इसे अपनी मर्जी का फैसला बताया है। फरमान खान का दावा है कि उन्होंने हिंदू रीति-रिवाज से शादी की है इसमें कोई लव जिहाद नहीं है। जबकि मोनालिसा के पिता का आरोप है कि उन्हें केरल के तिरुवनंतपुरम में षड़यंत्र के तहत उनकी बेटी से अलग किया गया। उन्होंने बताया कि जिस दिन उन्हें वापस लौटना था, उसी सुबह उन्हें जबरन होटल से ही भगा दिया गया, उनकी बेटी से मिलने तक नहीं दिया गया। पिता का कहना है कि उनकी बेटी बहुत भोली है और उसे बहला-फुसलाकर या कुछ खिला-पिलाकर यह कदम उठवाया गया है। वहीं मोनालिसा को फिल्मों में ब्रेक देने वाले निर्देशक सनोज मिश्रा ने इसे लव जिहाद करार देते हुए सोशल मीडिया पर एक लंबी पोस्ट लिखी है। पिता का कहना है कि वे आदिवासी समाज से आते हैं, इस घटना के बाद समाज में उन्हें काफी अपमानित होना पड़ रहा है।

भारतीय आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा को अंतरराष्ट्रीय पहचान

- डॉ. दीपा रानी (सहायक प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय)

आज भारत विभिन्न क्षेत्रों जैसे खेल, व्यापार, चिकित्सा वा स्वदेशी वस्तुओं का बाहुल्य मात्रा में निर्यात कर विश्व पटल पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है। आज विश्व में बड़े पैमाने पर लोग भारतीय संस्कृति को अपना रहे हैं।

हजारों वर्षों से भारत में प्रचलित आयुर्वेद पद्धति मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा के संतुलन को स्वस्थ बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। आज भारत की प्राचीन चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद केवल एक उपचार पद्धति नहीं, बल्कि संपूर्ण जीवन का दर्शन है। "आयुर्वेद" शब्द का अर्थ ही है– आयु का ज्ञान या जीवन को स्वस्थ और संतुलित बनाने का विज्ञान। आज जब सम्पूर्ण विश्व भिन्न–भिन्न प्रकार की शारीरिक और मानसिक बीमारियों से जूझ रहा है, तब भारत की आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति दुनिया के लिए वरदान सिद्ध हो रही है। आज आयुर्वेद की प्रासंगिकता बढ़ गई है। विश्व के कई देश जैसे अमेरिका, यूरोप, जापान और ऑस्ट्रेलिया में आयुर्वेदिक उपचार, हर्बल दवाओं और योग–ध्यान को अपनाया जा रहा है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयुर्वेद को बढ़ती मान्यता मिलने में सनातनी परम्परा, भारत सरकार और वैश्विक संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। विशेष रूप से विश्व स्वास्थ्य संगठन ने पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों के महत्व को स्वीकार करते हुए भारत में ग्लोबल सेंटर फॉर ट्रेडिशनल मेडिसिन की स्थापना का समर्थन किया है। आज यह केंद्र आयुर्वेद सहित विश्व की पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों पर अनुसंधान, नवाचार और प्रशिक्षण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से स्थापित किया गया है। इस पहल से भारतीय आयुर्वेद चिकित्सा को वैश्विक मंच पर नई पहचान और विश्वसनीयता मिली है। भारत सरकार ने भी आयुर्वेद के संरक्षण और प्रसार के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। आयुर्वेद, योग, यूनानी और होम्योपैथी को बढ़ावा देने के लिए आयुष मंत्रालय की स्थापना की गई। इस मंत्रालय के माध्यम से अनुसंधान, शिक्षा और अंतरराष्ट्रीय सहयोग को भी बढ़ावा दिया जा रहा है।

वीरांगना झलकारी बाई : 4 अप्रैल 1858, बलिदान दिवस

वीरांगना झलकारी बाई बचपन से ही साहसी, निर्भीक और पराक्रमी स्वभाव की बालिका थीं। उन्होंने घुड़सवारी, तलवारबाज़ी और युद्धकला में दक्षता प्राप्त की थी। उन्होंने अपनी योग्यता और क्षमता से झांसी की रानी लक्ष्मीबाई को प्रभावित किया और उनकी सेना की महिला टोली "दुर्गा दल" की महत्वपूर्ण सदस्य बन गईं। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के समय जब अंग्रेजों ने झांसी पर आक्रमण किया, तब झलकारी बाई ने अद्भुत साहस का परिचय दिया। उस समय परिस्थिति बहुत कठिन थी जब ब्रिटिश सेना किले के अंदर प्रवेश करने की कोशिश कर रही थी तब झलकारी बाई ने रानी लक्ष्मीबाई का वेश बनाकर अंग्रेजों को भ्रमित किया, जिससे योजना के अनुसार क्रांति को आगे बढाने के लिए रानी लक्ष्मीबाई सुरक्षित किले से निकल गयीं। झलकारी बाई ने राष्ट्र के लिए महत्वपूर्ण योगदान देते हुए इस महासमर में वीरगति पायी। वीरांगना झलकारी बाई का जीवन साहस, त्याग और देशभक्ति का अद्भुत उदाहरण है। उन्होंने यह सिद्ध किया कि देश की स्वतंत्रता के लिए नारियों का योगदान भी उतना ही महत्वपूर्ण रहा है जितना पुरुषों का। उनका बलिदान, राष्ट्रनिष्ठा और वीरता आज भी युवा पीढ़ी को साहस और मातृभूमि के प्रति समर्पण की प्रेरणा देती है।

सोशल मीडिया में हिंदुत्व

संकलन – प्रकाश श्रीवास्तव

15 फरवरी - महाशिवरात्रि का वैश्विक प्रभाव : ईशा फाउंडेशन

(#IshaMahashivratri2026) इस दिन कोयंबटूर में आयोजित महाशिवरात्रि उत्सव सोशल मीडिया पर छाया रहा। ग्रैमी विजेता एसजेडऐ – SZA द्वारा साड़ी पहनकर 'शिव शंभु' का जाप करने वाला वीडियो इंटरनेट पर वायरल हुआ। डिजिटल भक्ति: सदगुरु के पहले 'योगेश्वर लिंग महाअभिषेकम' को 14 करोड़ से अधिक लोगों ने लाइव देखा। इंस्टाग्राम पर #HarHarMahadev और #Adiyogi जैसे हैशटैग ट्रेंड हुए।

24–25 फरवरी सांस्कृतिक गौरव हिंदू पहचान

झारखंड के एक व्यक्ति द्वारा अपनी खोई हुई मां को वापस स्वीकार करने से पहले 'हिंदू बनने' की शर्त रखने की घटना ने 'सांस्कृतिक निष्ठा' (Cultural Loyality) के रूप में काफी चर्चा बटोरी।

हिंदूफोबिया के खिलाफ आवाज : हार्वर्ड विश्वविद्यालय पर 'संस्कृत' कोर्स के लिए उपयोग की गई एक डरावनी छवि को लेकर 'हिंदूफोबिया' का आरोप लगा, जिसे ट्विटर (X) पर हिंदू संगठनों ने व्यापक रूप से उठाया।

8 मार्च : रंग पंचमी

महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश में हिंदू नववर्ष के आगमन से पहले रंग पंचमी के धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व को दर्शाने वाले वीडियो काफी देखे गए।

18 फरवरी : हिंदू एकता का आह्वान

आरएसएस प्रमुख का संदेश– आरएसएस प्रमुख आदरणीय मोहन भागवत जी ने लखनऊ में हिंदू समाज को एकजुट और सशक्त होने की आवश्यकता पर बल दिया। उनके 'हिंदू समाज को संगठित करने' और 'सतर्कता' से जुड़े बयानों ने सोशल मीडिया पर 'हिंदू एकता' की चर्चाओं को तेज कर दिया।

3 मार्च : होलिका दहन और बुराई पर जीत

सोशल मीडिया पर #HolikaDahan के साथ 'अधर्म पर धर्म की जीत' और प्रह्लाद की भक्ति से जुड़े पोस्ट शेयर किए गए।

4 मार्च होली और हिंदू संस्कृति का उत्सव

#Holi2026: इस दिन इंस्टाग्राम पर AI–जनरेटेड हिंदू उत्सव की छवियों का ट्रेंड रहा। लोगों ने 'रॉयल राजस्थानी होली' और 'बॉलीवुड स्टाइल' की धार्मिक परिवेश वाली फोटो शेयर करने के लिए AI प्रॉम्प्ट्स का उपयोग किया।

सांस्कृतिक संदेश : ब्रांड्स और प्रभावशाली व्यक्तियों ने 'एकता' और 'सहिष्णुता' के संदेश के साथ हिंदू परंपराओं को आधुनिक तरीके से पेश किया।

15 मार्च : उपभोक्ता अधिकार और हिंदू मूल्य

विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस के अवसर पर कई हिंदू संगठनों और पेजों ने 'न्यायपूर्ण व्यापार' और 'धर्म–आधारित नैतिकता' (Ethical values) को जोड़ने वाले पोस्ट साझा किए।

एन सी आर के समाचार

– नंद किशोर शर्मा

नेहरू तारामंडल में विज्ञान उत्सव 2026 का आयोजन

नई दिल्ली, राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर बच्चों ने खेल–खेल में विज्ञान और अंतरिक्ष के रहस्य को समझा तीन मूर्ति भवन स्थित नेहरू तारामंडल और प्रधानमंत्री संग्रहालय व पुस्तकालय द्वारा विज्ञान उत्सव 2026 का आयोजन किया गया। उत्सव में काफी संख्या में छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों और विज्ञान प्रेमियों प्रेमियों ने भाग लिया। यह आयोजन ऐसा मंच बन गया जहां विज्ञान पाठ्य पुस्तकों से आगे बढ़कर प्रत्यक्ष अनुभव और प्रयोग के माध्यम से जीवंत हो उठा। खेल के साथ फिजिक्स क्षेत्र सबके आकर्षण का केंद्र रहा।

जैश के छह संदिग्ध सदस्य गिरफ्तार

गाजियाबाद। देश विरोधी गतिविधियों में शामिल जैश–ऐ– मोहम्मद समेत अन्य प्रतिबंधित आतंकी संगठनों से जुड़े 6 संदिग्धों को गिरफ्तार किया गया है। आरोपी पाकिस्तान में बैठे आकाओं के निर्देश लेते हुए सोशल मीडिया पर वीडियो और लिंक दिखाकर लोगों को उकसाते थे। संदिग्धों के निशाने पर हिंदू संगठनों से जुड़े दो लोग थे। पूछताछ में सामने आया है कि विदेश में बैठे अकाओं के कहने पर आरोपी सावेज हिंदू संगठन से जुड़े गाजियाबाद के दो लोगों को निशाना बनाने की योजना बना रहा था। बताया जा रहा है कि आतंकी प्रशिक्षण लेने के बाद अपने साथियों के साथ मिलकर इन दोनों की हत्या की साजिश रच रहा था। सूत्रों के अनुसार आरोपी सावेज ने ऐसे लोगों की सूची तैयार कर रखी है, जिन्हें समुदाय विशेष के बारे में आपत्तिजनक बात करने वाला बताया जाता है। पाकिस्तान में बैठे उनके आका समय–समय पर ऐसे लोगों के नाम बताते थे।

स्वास्थ्य सेवाएं सस्ती और विश्वसनीय हो : मुख्यमंत्री

नोएडा, ग्रेटर नोएडा वेस्ट के केडीएसजी अस्पताल का उद्घाटन करने आए प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को कहा कि स्वास्थ्य सेवाएं सस्ती और विश्वसनीय होनी चाहिए। मरीज को सही उपचार मिले, निजी क्षेत्र में कुछ अस्पतालों में मनमानी रेट लिए जाते हैं, ऐसा न हो। मुख्यमंत्री ने कहा कि एक 300 बेड के अस्पताल के शुरू होने से 1000 लोगों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार मिलता है। अपने उद्बोधन में मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत विकास की नई ऊंचाइयों को छू रहा है। वर्ष 2014 तक देश में केवल 6 एम्स थे। अब 23 एम्स काम कर रहे हैं। देश में 60 करोड लोगों को आयुष्मान भारत योजना का लाभ मिल रहा है। यूपी में इस योजना का लाभ प्राप्त करने वाले सबसे अधिक हैं।

मोदी ने उत्तर भारत के पहले चिप संयंत्र की नींव रखी

नोएडा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण (येडा) के सेक्टर– 28 में उत्तर भारत के पहले सेमीकंडक्टर संयंत्र का आनलाइन शिलान्यास किया। इस दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि विकसित भारत की नींव आत्मनिर्भरता के आधार पर रखी जाएगी। इसके लिए भारत में बने सेमीकंडक्टर चिप का होना जरूरी है। चिप संयंत्र के शिलान्यास कार्यक्रम को ऑनलाइन संबंधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि नोएडा में सेमी कंडक्टर का शिलान्यास 21 वीं सदी में हमारी क्षमता की नींव बनेगा। यह इकाई टेक्नोलॉजी पावरहाउस के रूप में उत्तर प्रदेश की नई पहचान को और सशक्त करेगी। उल्लेखनीय है किइस संयंत्र में डिजिटल उपकरणों में लगने वाली चिप तैयार की जायेगी।

राष्ट्र सेविका समिति

– प्रकाशवीर, पूर्व प्रधानाचार्य, शिशुमंदिर

भारत देश का दर्शन रहा है 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'। भारतवर्ष आदि – अनादि काल से ही मनीषियों और विदुषियों का देश रहा है। जहां गार्गी, मैत्रेयी, सीता, अनुसूया, विष्पला जैसी स्त्रियों ने जन्म लिया है। भारत की महिलाओं ने युद्धभूमि से लेकर समाज सुधार तक अपना योगदान सभी क्षेत्रों में दिया है।

कालखंड में कुछ कुरीतियां हमारे समाज में भी प्रवेश कर गईं, जिसके कारण महिलाओं की सक्रियता समाज निर्माण में कुछ कम हो गई, परंतु जिस प्रकार सूर्य की चमक को अधिक समय तक बादल नहीं ढक सकता, उसी प्रकार भारतीय नारियों के तेज को भी अधिक समय तक नहीं ढका जा सकता। हमारे शास्त्रों के अनुसार यज्ञ भी तब तक पूर्ण नहीं होता, जब तक स्त्री अपने पति के साथ न हो। ऐसे में नारी जो आधा समाज है उसके सहयोग के बिना राष्ट्र यज्ञ की पूर्णाहुति भी असंभव ही है।

इन्हीं विषयों का चिंतन करते हुए दूरदर्शी लक्ष्मीबाई केलकर जिन्हें हम प्यार से वंदनीय मौसीजी कहते हैं, डॉक्टर केशवराव बलिराम हेडगेवार के पास पहुंची, जिनकी शाखा में मौसी जी के बेटे पहले से ही जा रहे थे, और शाखा में जाने के बाद उनके व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन परिलक्षित हो रहे थे। लक्ष्मीबाई केलकर जी का डॉक्टर हेडगेवार से मिलने का उद्देश्य था, राष्ट्रनिर्माण में महिलाओं की समुचित सहभागिता।

डॉक्टर हेडगेवार जी की प्रेरणा से मौसी जी ने मात्र कुछ बहिनों के सहयोग से 1936 में विजयदशमी के दिन वर्धा में राष्ट्र सेविका समिति की नींव रखी। यह स्वतंत्रता से पूर्व रखा गया एक सशक्त कदम था, जिसका उद्देश्य था महिलाओं का शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक विकास ताकि राष्ट्र नामक वाहन के दोनों पहिए सुदृढ़ता से चल सकें।

मौसीजी के अनुसार सभी महिलाओं में मातृत्व, कर्तृत्व एवं नेतृत्व के गुणों का समुचित समावेश आवश्यक है। इसलिए उन्होंने मातृत्व के आदर्श के रूप में जीजामाता को रखा। जिन्होंने शिवाजी जैसे तेजस्वी पुत्र को जन्म दिया, और आगे चलकर हिन्दूराष्ट्र की स्थापना की।

कर्तृत्व के आदर्श रूप में रानी अहिल्याबाई होलकर का स्मरण कराया, जिनका सुशासन आज भी दृष्टांत है । प्रजावत्सल लोकमाता अहिल्याबाई ने धर्म के प्रचार–प्रसार और औद्योगीकरण को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे अपनी बुद्धिमत्ता, साहस और प्रशासनिक कौशल के लिए प्रसिद्ध हैं। नेतृत्व के आदर्श के रूप में उन्होंने रानी लक्ष्मीबाई को चुना जिनके एक आह्वान "मैं अपनी झांसी नहीं दूँगी" पर पूरी प्रजा उनके साथ आकर युद्धभूमि पर खड़ी हो जाती है।

वन्दनीय मौसी जी ने संघ की तरह ही हमारे सनातन संस्कृति के प्रतीक भगवा ध्वज को गुरु मानते हुए महिलाओं की शाखा आरम्भ की। 90 वर्ष पूर्व जो राष्ट्र सेविका समिति नामक छोटा सा पौधा मौसीजी ने लगाया था, वर्तमान में उसने विशाल वटवृक्ष का रूप ले लिया है, और केवल देश ही नहीं अपितु विदेशों में भी राष्ट्र सेविका समिति की शाखायें फैल चुकी हैं। राष्ट्र सेविका समिति की बहनें वंदनीय मौसी जी के स्वप्न को अपनी सतत साधना द्वारा मूर्त रूप दे रही हैं।

विश्व हिन्दू परिषद

विश्व हिंदू परिषद की स्थापना राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक परम पूज्य श्री गुरुजी, स्वामी चिन्मयानंद जी, एस. एस. आप्टे जी तथा मास्टर तारा सिंह जी के मार्गदर्शन में 21 मई 1964 को मुंबई के संदीपनी साधनाशाला में हुई। देश में 500 वर्षों के लंबे समय से चले आ रहे श्री राम जन्मभूमि विवाद को विश्व हिंदू परिषद ने अनेक धर्माचार्यों तथा न्यायालय के सहयोग से हल कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विश्व हिंदू परिषद की स्थापना हिंदू समाज को एकजुट कर उसे मजबूती प्रदान करना, हिंदू धर्म की रक्षा और इसे बढ़ावा देने के लिए काम करना तथा हिंसा और भेदभाव का विरोध करना, समाज के सहयोग से हिंदू मंदिरों का निर्माण व जीर्णोद्धार कराना, देश से गोहत्या और धर्मांतरण के मामलों के विरोध में समाज को जाग्रत कर उसे प्रतिबंधित कराने के उद्देश्य से की गई।

परिषद का संगठनात्मक स्वरूप : संपूर्ण देश में विश्व हिंदू परिषद का मजबूत संगठनात्मक स्वरूप है। जिसकी निम्नानुसार विभिन्न स्तरों पर कार्यकारिणी गठित हैं। ♦ अखिल भारतीय स्तर ♦ क्षेत्र स्तर ♦ प्रांत स्तर ♦ विभाग स्तर ♦ जिला/महानगर स्तर ♦ प्रखंड स्तर ♦ खंड स्तर ♦ उपखंड स्तर।

कार्य की वर्तमान स्थिति : परिषद की सभी इकाईयां अपने–अपने स्तर से अपने–अपने क्षेत्रों में धर्मांतरण, गो हत्या, लव जिहाद, लैंड जिहाद आदि हिंदू धर्म को कमजोर करने वाली गतिविधियों से समाज को जाग्रत करना, तथा ऐसी गतिविधियों के विरुद्ध प्रशासन स्तर से भी सख्त कार्रवाई करवाने का कार्य तेजी से चल रहा है।

सामाजिक समरसता– अपना काम सारे हिंदू समाज के लिये होने के कारण उसके किसी भी अवयव की उपेक्षा नहीं की जा सकती। सभी हिंदू बंधुओं के साथ हमारा स्नेहपूर्ण व्यवहार होना चाहिये। किसी भी हिंदू को हीन समझ कर दूर ढकेलना पाप है। कम से कम संघ के स्वयंसेवकों के मन में ऐसी संकुचित भावनाओं का कोई स्थान नहीं होना चाहिए। हिंदुस्थान पर प्रेम करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के साथ हमारा व्यवहार बंधुत्व का ही होना चाहिये। लोग हमारे बारे में क्या कहते हैं, इस बात में कोई अर्थ नहीं है। यदि हमारा व्यवहार आदर्श रहा तो सब हिंदू हमारी ओर आकर्षित होंगे। सारा हिंदू समाज हमारा कार्य क्षेत्र है।

– डॉ. केशवराव हेडगेवार (डॉ. हेडगेवार – एक अनोखा नेतृत्व / 53)

स्व – हमारे अपने देश में हम अक्सर स्वयं को हिंदू कहलाए जाने के प्रति झिझक महसूस करते हैं। हम एक हीन भावना के शिकार हो चुके हैं। यह अत्यावश्यक है कि हम इसलिए अपने भीतर हिंदू होने के प्रति एक सघन गर्व का भाव जगाएं तथा एक मिशनरी उत्साह विश्व भर में पवित्र भारतीय परंपराओं के विकास के लिए पैदा करें।

– श्री गुरुजी (5 सरसंघचालक, अरुण आनंद, प्रभात प्रकाशन, प्रथम संस्करण–2020, पृष्ठ– 99)

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से मेरे कुछ मित्र भोजन करने के लिए आएंगे। परंतु मैं चाहता हूं कि उन सब को मेरी तरह सम्मान प्राप्त हो, चाहे वह किसी भी जाति से संबंध रखते हैं। उन्हें भोजन उन्हीं बर्तनों में परोसा जाए जिनमें हमारा परिवार खाता है। मैं जाति के नाम पर किसी प्रकार का भेदभाव नहीं चाहता।

–बाला साहब देवरस (अपनी माता से निवेदन)

(5 सरसंघचालक, अरुण आनंद, प्रभात प्रकाशन, प्रथम संस्करण–2020, पृष्ठ– 108)

नागरिक कर्तव्य – हमारी दिलचस्पी मात्र इस बात में है कि राजनीति के क्षेत्र में अच्छे लोगों का निर्वाचन होना चाहिए। हम यह नहीं मानकर चलते कि राजनीतिक संस्थापन समाज को परिवर्तित करेगा। परंतु अगर अच्छे लोगों का चुनाव होगा, तब वे राष्ट्र–निर्माण में बाधाएँ खड़ी न करेंगे, वे प्रतिबंधों और हिंदुत्व के विरोध के लिए न जाएँगे।

– रज्जू भैय्या (5 सरसंघचालक, अरुण आनंद, प्रभात प्रकाशन, प्रथम संस्करण–2020, पृष्ठ– 179)

सामजिक समरसता – दुनिया भर के मुसलमानों की एक इस्लामी मिल्लत की अवधारणा अव्यावहारिक सिद्ध हुई है। अतः भारत के मुसलमानों को चाहिए कि 'इस्लाम का भारतीयकरण' कर उसे इस देश की धरती और यहाँ के पूर्वजों के साथ जोड़ें, जिससे भारत का मुसलमान भी इस देश की सांस्कृतिक धारा का अंग बनकर उस पर गर्व कर सके और पूरी निष्ठा व निर्भयता के साथ सबके साथ कंधे से कंधा मिलाकर चले। – कु.सी. सुदर्शन

(हमारे सुदर्शन जी, सं. बल्देव भाई शर्मा, प्रभात प्रकाशन दिल्ली, 2017, पृष्ठ 206)

पर्यावरण

आज ग्लोबल वार्मिंग की चुनौती है, पर्यावरण संरक्षण के लिए मैं व्यक्तिगत स्तर पर क्या कर सकता हूँ, करें। सिंगल यूज़ प्लास्टिक का उपयोग कैसे कम हो सकता है, व्यवहार में लायें। पेड़ लगायें, वाटर हार्वेस्टिंग करें।

– डॉ. मोहन भागवत

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत की सीमाओं की सुरक्षा का विश्लेषण

– डॉ. अनुज, सहायक प्राफेसर (अतिथि) दिल्ली स्कूल ऑफ जर्नलिज्म, दिल्ली विश्वविद्यालय

LAC पर इंफ्रास्ट्रक्चर तेज, BRO ने 12 नई सड़कों का कार्य शुरू किया

पूर्वी लद्दाख और अरुणाचल प्रदेश में वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) के पास बॉर्डर रोड ऑर्गनाइजेशन (BRO) ने 12 नई रणनीतिक सड़कों के निर्माण का कार्य शुरू किया। रक्षा मंत्रालय के अनुसार इन सड़कों से सेना की त्वरित तैनाती और लॉजिस्टिक्स सपोर्ट मजबूत होगा। चीन के साथ जारी तनाव को देखते हुए यह कदम सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जा रहा है, हालांकि विशेषज्ञों ने पर्यावरणीय प्रभाव पर भी ध्यान देने की जरूरत बताई है।

भारत-पाक सीमा पर स्मार्ट फेंसिंग प्रोजेक्ट का विस्तार

गृह मंत्रालय ने जम्मू सेक्टर में स्मार्ट फेंसिंग प्रोजेक्ट (CIBMS) के विस्तार को मंजूरी दी। इस प्रणाली में सेंसर, थर्मल इमेजर और रडार का उपयोग कर घुसपैठ को रियल टाइम में ट्रैक किया जाएगा। BSF अधिकारियों के अनुसार इससे मानव निगरानी पर निर्भरता कम होगी और प्रतिक्रिया समय तेज होगा। हालांकि तकनीकी रखरखाव और लागत को लेकर कुछ चुनौतियां भी सामने आई हैं।

तटीय सुरक्षा मजबूत करने के लिए 8 नए रडार स्टेशन स्थापित

भारतीय तटरक्षक बल ने पश्चिमी तट पर 8 नए रडार स्टेशन स्थापित करने की प्रक्रिया शुरू की। 26/11 के बाद शुरू किए गए तटीय सुरक्षा नेटवर्क को और मजबूत करने के उद्देश्य से यह कदम उठाया गया है। अधिकारियों का कहना है कि इससे समुद्री गतिविधियों की निगरानी बेहतर होगी। विशेषज्ञों ने स्थानीय मछुआरों के साथ समन्वय बढ़ाने की जरूरत पर जोर दिया है।

भारत-बांग्लादेश सीमा पर एंटी-स्मगलिंग ऑपरेशन तेज, BSF को अतिरिक्त अधिकार

भारत–बांग्लादेश सीमा पर बढ़ती तस्करी और अवैध गतिविधियों को रोकने के लिए BSF ने विशेष एंटी–स्मगलिंग ऑपरेशन शुरू किया। गृह मंत्रालय ने सीमावर्ती क्षेत्रों में अतिरिक्त निगरानी उपकरण और पेट्रोलिंग बढ़ाने के निर्देश दिए। ड्रोन और नाइट विजन तकनीक का उपयोग किया जा रहा है। अधिकारियों के अनुसार हाल के दिनों में तस्करी के कई प्रयास विफल किए गए, जबकि स्थानीय स्तर पर खुफिया तंत्र को भी मजबूत किया गया है।

ड्रोन निगरानी से सीमा सुरक्षा में बढ़ोतरी, LoC पर नई तकनीक लागू

भारतीय सेना ने नियंत्रण रेखा (LoC) पर ड्रोन आधारित निगरानी प्रणाली को और विस्तारित किया है। नई तकनीक के जरिए संदिग्ध गतिविधियों की पहचान तुरंत की जा सकेगी। रक्षा सूत्रों के अनुसार यह प्रणाली रात और खराब मौसम में भी प्रभावी है। विशेषज्ञों का मानना है कि इससे घुसपैठ की घटनाओं में कमी आएगी, लेकिन साइबर सुरक्षा चुनौतियों पर ध्यान देना जरूरी है।

भारत-नेपाल सीमा पर इंटीग्रेटेड चेक पोस्ट का उद्घाटन

भारत–नेपाल सीमा पर एक नए इंटीग्रेटेड चेक पोस्ट (ICP) का उद्घाटन किया गया, जिससे व्यापार और आवाजाही के साथ सुरक्षा निगरानी को भी सुदृढ़ किया जाएगा। गृह मंत्रालय के अनुसार यह मॉडल "सुरक्षा और सुविधा" दोनों को संतुलित करेगा। अधिकारियों ने बताया कि इससे अवैध तस्करी और अनियंत्रित आवाजाही पर नियंत्रण मिलेगा।

अंतरराष्ट्रीय सीमा पर मल्टी-लेयर सुरक्षा सिस्टम लागू, AI निगरानी शुरू

भारत–पाक अंतरराष्ट्रीय सीमा पर मल्टी–लेयर सुरक्षा प्रणाली लागू की गई है, जिसमें एआई आधारित कैमरे, सेंसर और रियल टाइम डेटा एनालिटिक्स शामिल हैं। BSF ने बताया कि इससे संदिग्ध गतिविधियों की तुरंत पहचान संभव होगी। गृह मंत्रालय ने इसे "स्मार्ट बॉर्डर मैनेजमेंट" का हिस्सा बताया। विशेषज्ञों का मानना है कि इससे घुसपैठ और ड्रग तस्करी पर प्रभावी नियंत्रण स्थापित किया जा सकेगा।

गृह संपर्क अभियान

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा शताब्दी वर्ष कार्यक्रम के अंतर्गत देशभर में गृह संपर्क अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान का उद्देश्य समाज के अधिक से अधिक लोगों तक पहुँच बनाना और संगठन के कार्यों की जानकारी देना है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार देश के कुल 46 प्रांतों में से 37 प्रांतों में यह कार्यक्रम अब तक संपन्न हो चुका है, जबकि शेष प्रांतों में यह अभियान अभी जारी है।

अभियान के दौरान स्वयंसेवकों ने व्यापक स्तर पर घर–घर जाकर संपर्क किया। आँकड़ों के अनुसार लगभग 3,89,465 ग्रामों और 31,143 बस्तियों तक संपर्क स्थापित किया गया। इस प्रक्रिया में लगभग 10,02,12,162 घरों तक पहुँच बनाई गई। इसके साथ ही लोगों तक विचार और जानकारी पहुँचाने के लिए लगभग 9,11,88,203 पत्रक वितरित किए गए। अभियान के दौरान 84,13,552 पुस्तकों की भी बिक्री की गई, जिससे लोगों में संगठन के विचारों और गतिविधियों के प्रति जागरूकता बढ़ी।

यह आँकड़े वार्षिक प्रतिवेदन 2025–26 के अनुसार प्रस्तुत किए गए हैं। यह अभियान समाज के विभिन्न वर्गों के साथ संवाद स्थापित करने और संगठन के कार्यों को व्यापक स्तर पर पहुँचाने का एक महत्वपूर्ण प्रयास माना जा रहा है।

हिन्दू सम्मेलन

देश के हिन्दू समाज को जागृत करने की दृष्टि से संघ द्वारा व्यापक स्तर पर हिन्दू सम्मेलनों का आयोजन पूरे देश भर में किया जा रहा है। इन सम्मेलनों के माध्यम से समाज जागरण के साथ–साथ जनमानस को पंच परिवर्तन संकल्प भी दिलाया गया। हिन्दू सम्मेलन के अपने एक सन्देश में पूज्य सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने कहा कि व्यक्ति का मूल्यांकन जाति, भाषा या संपत्ति से नहीं होना चाहिए और सामाजिक समरसता के लिए भेदभाव खत्म करना जरूरी है।

अभी तक की जानकारी के अनुसार 36000 से अधिक हिन्दू सम्मेलन आयोजित किये जा चुके हैं और अभी भी कुछ प्रान्तों में इनका आयोजन हो रहा है। प्रतिनिधि सभा में उपलब्ध कराये गए आंकडें निम्न हैं –

कुल 46 प्रांतों में से 37 प्रांतों ने दिये जानकारी के अनुसार अब तक सम्पन्न कार्यक्रम

कुल मंडल सम्मेलन	:	23,143
कुल बस्ती सम्मेलन	:	13,905
उपस्थित महिला	:	1,55,95,124
उपस्थित पुरुष	:	1,93,40,087
कुल उपस्थिति	:	3,49,35,211

भारतवर्ष की कालगणना

– नीलू शेखावत

भारत वर्ष की काल गणना में अनेकों संवत चले, किन्तु जीवित थोड़े ही रहे। सबसे अधिक और अनवरत जीवन विस्तार विक्रम संवत का ही है। उत्तरी भारत में विक्रम संवत का आरम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से तथा दक्षिण भारत में कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा से माना जाता है। इसलिए उत्तरी को चैत्रादि एवं दक्षिणी को कार्तिकादि संवत् कहा जाता है। उत्तर में मास कृष्ण प्रतिपदा से शुरू होकर शुक्ल पूर्णिमा तक चलते हैं वहीं दक्षिण में मास प्रारम्भ शुक्ल प्रतिपदा से होकर समाप्ति कृष्ण अमावस्या पर होती है। विक्रम के अन्य नाम कृत या मालव संवत् भी हैं, जिनका उपयोग नवीं शताब्दी पूर्व तक होता रहा।

आज समस्त उत्तर भारत विक्रमादित्य शकारि की कथाओं से पूरित है। विक्रमदित्य का भारतीय अनुश्रुतियों में प्राचीनतम उल्लेख गाथा सप्तशती में मिलता है जहाँ विक्रम विषयक यह श्लोक है –

सवाहणसुहरसतोसिएण देन्तेण तुह करे सक्खम्
चलणेण विक्कमाइत्तचरिअ अणु सिक्खिअ तिस्सा

एक ऐसा प्रतापी राजा जो लाखों के उपहार दान किया करता था। इसके पश्चात् जैनाचार्य मेरुत्तुङ्ग रचित पट्टावली में उल्लिखित मिलता है कि विक्रमादित्य ने शकों का उन्मूलन कर विक्रम संवत् की स्थापना की। शकों के आतंक और दुर्दान्तता से इतिहास भलीभांति परिचित है।

हजारों वर्षों से हमें बार–बार यह बताया जाता है कि हम हारे हुए, पराभवयुक्त पूर्वजों की संतानें हैं जबकि हमारे प्रबल–बल विक्रम चरित्रों को हमसे सायास छुपाया जाता है। सम्राट विक्रमादित्य हमारी सुविक्षित संस्कृति का ऐसा ही सर्वोच्च शिखर और प्रकाश स्तंभ हैं। उनकी दिग्विजय, संवत प्रवर्तन और गौरव गाथा ने विद्वानों से लेकर सामान्य जनता तक, नागरिकों से लेकर ग्रामवासियों तक सबको अभिभूत किया है। इतिहास के पंडित चाहे अपने पूर्वाग्रह से युक्त मस्तिष्क में उन्हें स्वीकृति न दे पाए, किंतु लोक मन में उनके प्रति श्रद्धा और सद्भावना आज भी अक्षुण्ण है। वैसे भी कुछ चरित्र मुद्रा या अभिलेख अंकन से नहीं, लोकमन की स्मृति से स्वतः निश्चित है। राम और कृष्ण की प्रामाणिकता के लिए लिखित अभिलेख वांछनीय नहीं, परंपरा से ही लोकमन स्मृत है क्योंकि लोक कथाएं मात्र गुण गाथाएं नहीं हैं, जन जीवन की श्रुत स्मृतियां हैं, मानव जाति की परंपरा और इतिहास की आद्यगाथा हैं। अनुश्रुतियों की उपेक्षा आत्म प्रवंचना ही है।

विक्रम संवत भारत की ऐसी ही सजीव व्यवस्था है जो आज दिन तक निरंतर है। वह भी तब जबकि ईस्वी संवत् उसके समानांतर समस्त विश्व को अपने प्रभाव में ले चुकी है। अनेक उत्थान पतन से गुजर कर अचल हिमालय की तरह स्थिर रहने वाला यह संवत हमारे राष्ट्र की चिर संचित निधि और महान धारणा की स्मृति है। भारतीय संस्कृति पर अभिमान करने वालों के लिए यह कम गौरव का विषय नहीं कि आज भारतवर्ष में प्रवर्तित विक्रम संवत बुद्ध निर्माण काल गणना को छोड़कर विश्व भर के सभी प्रचलित संवत्सर में सर्वाधिक प्राचीन है। इस संवत की कालजयी जीवटता के बारे में आप क्या कहेंगे? इसके पूर्व और पश्चात कई संवत बने और बिगड़े किंतु इसका अस्तित्व अभी भी अचल बना हुआ है। इधर हमारी निकृष्टता और दुर्भाग्य यह कि इस जीवित सरणि के प्रवर्तक के अस्तित्व का अब तक हम कल निर्धारण नहीं कर पाए।

जिन विक्रमादित्य की तेज राशि ने समस्त भूमंडल को प्रकाशित किया, आज भी जिनके स्मरण मात्र से प्रत्येक भारतीय का सिर गर्व से उठ जाता है, जिनकी लोकप्रियता का घोष आज ढाई हजार वर्ष के बाद भी गूंज रहा है, जिनका सिंहासन आज भी भारतीयों की चर्चा का विषय है, जिनके नवरत्नों की विद्वता की चर्चा आज भी विद्वान मंडलियां करती हैं, उन विक्रमादित्य का स्थान भारतीय इतिहास अब तक तय नहीं कर पाया।

कविवर मैथिलीशरण गुप्त ने इस विडंबना को कुछ इस तरह व्यक्त किया –

दो सहस्त्र संवत बीते हैं
हम निज विक्रम बिना आज फिर मारे मारे जीते हैं
नित्य नये शक हूण हमारा जीवन रस पीते हैं
होकर भी क्या हुए आज भी हम उनके मन चीते हैं
आपस के संबंध हमारे कड़वे हैं तीते हैं
भरे भरे हैं हाय हृदय किंतु हाथ हमारे रीते हैं

इतिहास तय नहीं कर पाया, न ही सही। लोक मेधा उन्हें न भूलेगी।

इस देश ने अनेक शासकों का उत्थान पतन देखा, अनेक शासनों का परिवर्तन देखा, किंतु विक्रम संवत् की लोकप्रियता ने सबको पीछे छोड़ दिया। विक्रम और उनका विक्रमाब्ध हमारे स्वाभिमान, शौर्य और स्वर्ण युग के पर्याय हैं।

RSS: Evolution from an Organization to a Movement

– समीक्षक : डॉ. अनिल कुमार निगम, वरिष्ठ पत्रकार

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) के इतिहास, विचारधारा और संगठनात्मक विकास को समझने के लिए रतन शारदा की पुस्तक RSS: Evolution from an Organization to a Movement एक महत्वपूर्ण कृति मानी जाती है। इस पुस्तक में लेखक ने यह विश्लेषण करने का प्रयास किया है कि 1925 में नागपुर में स्थापित एक छोटे से संगठन ने किस प्रकार समय के साथ एक व्यापक सामाजिक आंदोलन का रूप धारण किया।

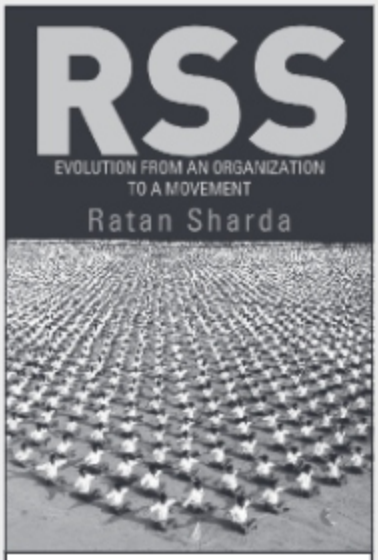

लेखक : रतन शारदा
प्रकाशन वर्ष : 2025
प्रकाशक:Rupa Publications
मूल्य : लगभग ₹477
(हार्डबाउंड संस्करण)

पुस्तक का मुख्य तर्क यह है कि संघ केवल एक संगठनात्मक ढांचा नहीं, बल्कि एक वैचारिक और सामाजिक आंदोलन के रूप में विकसित हुआ है। लेखक के अनुसार इस विकास के पीछे संघ के विभिन्न सरसंघचालकों–डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार से लेकर वर्तमान सर संघ चालक मोहन भागवत जी तक की नेतृत्व क्षमता और दूरदृष्टि का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। पुस्तक में बताया गया है कि संघ की शाखा–प्रणाली, प्रशिक्षण पद्धति और अनुशासन ने संगठन को निरंतर विस्तार देने में अहम भूमिका निभाई।

लेखक ने इस पुस्तक के लिए विभिन्न ऐतिहासिक दस्तावेजों, पत्रों, प्रस्तावों और अभिलेखों का अध्ययन किया है। इसके साथ–साथ उन्होंने अपने व्यक्तिगत अनुभवों और संघ के साथ लंबे समय तक जुड़े रहने के आधार पर भी महत्वपूर्ण टिप्पणियाँ प्रस्तुत की हैं। इस कारण पुस्तक में संघ की कार्यप्रणाली और उसके वैचारिक विकास की एक "अंदरूनी झलक" दिखाई देती है।

पुस्तक की शैली सरल, विश्लेषणात्मक और क्रमबद्ध है। इसमें संघ के विभिन्न चरणों–स्थापना, विस्तार, चुनौतियां और परिवर्तन को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया गया है। साथ ही इसमें बताया गया है कि बदलते सामाजिक–राजनीतिक परिवेश में संघ ने किस प्रकार अपनी कार्यशैली और रणनीतियों में परिवर्तन करते हुए स्वयं को एक व्यापक जनआंदोलन के रूप में स्थापित किया।

यह पुस्तक मुख्यतः संघ के दृष्टिकोण से लिखी गई है। संघ के इतिहास और संगठनात्मक संरचना को समझने के इच्छुक पाठकों के लिए यह पुस्तक अत्यंत उपयोगी और संदर्भपूर्ण है।

समग्र रूप से, RSS: Evolution from an Organization to a Movement संघ की वैचारिक यात्रा, संगठनात्मक विस्तार और नेतृत्व की भूमिका को समझने का एक गंभीर प्रयास है। यह पुस्तक शोधार्थियों, विद्यार्थियों तथा समकालीन भारतीय राजनीति और समाज में रुचि रखने वाले पाठकों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है।

आत्मनिर्भर भारत के समाचार

संकलन - अपर्णा इरा

♦ दूरसंचार इंजीनियरिंग केन्द्र, 6 जी मानकीकारण पर अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला : दूरसंचार विभाग की तकनीकि शाखा, दूरसंचार इंजीनियरिंग केन्द्र, 6 जी मानकीकारण पर अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला के आयोजन की तैयारी। इस कार्यशाला में नवाचार को मजबूत करना और वैश्विक दूरसंचार मानकों में भारत की भूमिका को बढ़ाना हैं। आत्मनिर्भर भारत के अनुरूप इसका मुख्य उद्देश्य भारतीय तकनीकों को वैश्विक 6 जी विकास में सहायक के रूप में स्थापित करता हैं। अगली पीढ़ी के संचार के लिए 2030 तक भारत का रोडमैप तैयार करता हैं।

♦ भारत ने नौसेना आत्मनिर्भर विजन 2047 तहत INS सूरत (स्टील्थ विध्वंसक तकनीक) और स्वदेशी पनडुब्बियों के माध्यम से 'मेक इन इंडिया' को बढ़ावा दिया हैं। मिशन 2070 तक नेट जीरो लक्ष्यों को पूरा करने के लिए स्वदेशी ऊर्जा उत्पादन और 'वोकल फॉर लोकल' के माध्यम से आर्थिक स्थिरता पर ध्यान केंद्रित करता है. जो 2020 में शुरुआत की गई थी।

♦ नमो ड्रोन दीदी योजना की कृषि ड्रोन तकनीक : नमो ड्रोन दीदी योजना 15000 स्वयं सहायता समूहों (SHGs) को सब्सिडी के साथ कृषि ड्रोन प्रदान करती हैं। इससे महिलाओं को तकनीकी तंत्र से जोड़ा जा सकेगा।

♦ 7 मार्च 2024 को स्वीकृत इंडियाएआई मिशन का उद्देश्य पांच वर्षों में ₹10,371.92 करोड़ के बजट के साथ एक मजबूत और समावेशी एआई पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना है। इसका मुख्य लक्ष्य कंप्यूटिंग तक पहुंच को सुगम बनाना, नवाचार को बढ़ावा देना, डेटासेट में सुधार करना, स्टार्टअप्स को वित्तपोषण प्रदान करना और एआई के नैतिक उपयोग को सुनिश्चित करना है।

♦ केंद्रीय गृह मंत्री और सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने नई दिल्ली में जनगणना–2027 के लिए डिजिटल उपकरण और शुभंकर – प्रगति (महिला) और विकास (पुरुष) – का सॉफ्ट लॉन्च किया। जनगणना–2027, जो दो चरणों में आयोजित की जाएगी, विश्व की सबसे बड़ी जनगणना है। पहली बार जनगणना डिजिटल रूप से आयोजित की जाएगी, और पहली बार स्व–गणना का विकल्प उपलब्ध होगा। स्व–गणना एक सुरक्षित वेब–आधारित सुविधा है जिसके माध्यम से उत्तरदाता घर–घर सर्वेक्षण से पहले 16 भाषाओं में अपनी जानकारी ऑनलाइन दर्ज कर सकते हैं। जनगणना–2027 के शुभंकर, 'प्रगति' और 'विकास', 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने के संकल्प को पूरा करने में महिलाओं और पुरुषों की समान भागीदारी का प्रतीक हैं।

♦ 1 मार्च, 2026 के निर्देश में मैसेजिंग पर ध्यान केंद्रित किया गया है, जबकि भारतीय बैंकिंग और यूपीआई प्रणाली में सिम–बाइंडिंग पहले से ही सख्ती से लागू है। भविष्य में यूपीआई में बदलावरू एनपीसीआई ने 1 अप्रैल, 2025 से प्रभावी नए सुरक्षा दिशानिर्देशों की घोषणा की है, जिनके अनुसार निष्क्रिय मोबाइल नंबरों (जिन्हें अक्सर दोबारा इस्तेमाल किया जाता है) से जुड़े यूपीआई आईडी को धोखाधड़ी रोकने के लिए निष्क्रिय कर दिया जाएगा, और बैंकों को अपने डेटाबेस को साप्ताहिक रूप से अपडेट करना होगा। एआई सेवाएं (मेघराज क्लाउड) एनआईसीसी अपने मेघराज क्लाउड के माध्यम से उन्नत सेवाएं प्रदान कर रहा है, जैसे कि टेक्स्ट अनुवाद/लिप्यंतरण (एआई पाणिनी), प्रतिलेखन (एआई श्रुति), टेक्स्ट सारांश (एआई सारांश), और जनरेटिव एआई चैटबॉट सेवाएं (एआई अन्वेषिका)।

♦ 'बीसी सखी योजना' ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत महिलाओं को सशक्त की पहल हैं। उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए खास योजना हैं। इसके तहत प्रदेश की सुदूर गांव तक बैंकिंग सेवाओं की पहुंच तेज हुई हैं। परिणामतः करीब 40 हजार से ज्यादा महिलाएं आत्मनिर्भर बनकर अपने परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत कर रहीं हैं। बीसी सखियां इस योजना के अनुसार सेवाएं दे रही हैं। जैसे खेतों में पैसा जमा या निकासी, खाता खुलना इत्यादि। इससे ग्रामीणों को बैंक जाने की परेशानी कम हुई हैं और उनके लिए सम्माननीय रोजगार प्राप्त हुआ है।

♦ आत्मनिर्भर भारत के अन्तर्गत पवन ऊर्जा क्षमता का 21 गीगावाट से बढ़कर 54 गीगावाट का 2026 होना ही विकसित भारत की सकारात्मकता को दिखाता हैं। वहीं सौर ऊर्जा 2.8 गीगावाट से बढ़कर 150 गीगावाट पहुंच गई है।

3 अप्रैल , पुण्यतिथि : छत्रपति शिवाजी महाराज

छत्रपति शिवाजी महाराज भारतीय इतिहास के महान योद्धा, कुशल शासक और राष्ट्रनायक हैं। माता जीजाबाई और गुरु दादाजी के निर्देशन में शिवाजी महाराज ने बचपन में ही मुस्लिम आक्रान्ताओं से मातृभूमि को स्वतंत्र कराने का संकल्प लिया। उन्होंने पराधीनताकाल के उस घोर अंधियारे युग में भारतीय जनमानस को राष्ट्रबोध कराया और हिन्दवी साम्राज्य की स्थापना की। उनका राज्याभिषेक शास्त्र सम्मत हिन्दू स्वराज्य का महत्वपूर्ण प्रतीक माना जाता है। उन्होंने अपने साहस, बुद्धिमत्ता और रणनीति के बल पर कई महत्वपूर्ण किलों पर अधिकार कर हिन्दू राज्य का विस्तार किया। उन्होंने अपने राज्य में न्यायपूर्ण प्रशासन स्थापित किया। प्रचलित फ़ारसी शब्दों के स्थान पर संस्कृत और मराठी शब्दों का राज्य व्यवहार कोश तैयार कराया। सैन्य सुगठन, किसानों की सुरक्षा, प्रजा का हित और मातृशक्ति के सम्मान की रक्षा उनके सुशासन की महत्वपूर्ण विशेषताएं थीं। उन्होंने सेना में अनुशासन और नैतिकता के पालन का का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया।

छत्रपति शिवाजी महाराज का कृतित्व साहस, राष्ट्रभक्ति, दूरदर्शिता और सुशासन का अद्भुत उदाहरण है। उन्होंने भारतीय समाज में स्वतंत्रता, स्वाभिमान और संगठन की भावना को जागृत किया। आज भी उनका व्यक्तित्व और कृतित्व हमें देशभक्ति, न्याय और नेतृत्व की प्रेरणा देता है।

5 अप्रैल , पुण्यतिथि : पंडिता रमाबाई

उन्नीसवीं शताब्दी में जन्मी पंडिता रमाबाई ने बाल्यावस्था से ही संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान अपने पिता अनंत शास्त्री डोंगरे से संस्कृत की शिक्षा प्राप्त कर भारतीय धार्मिक ग्रंथों का विशद अध्ययन किया। उनकी असाधारण विद्वता के कारण उन्हें "पंडिता" और "सरस्वती" की उपाधि मिली। शास्त्रों के अध्ययन से वे जान चुकी थीं कि प्राचीन काल की भारतीय नारी शस्त्र और शास्त्र दोनों में पारंगत थीं और उनकी सामाजिक स्थिति भी सम्मानजनक थी। मुस्लिम और ब्रिटिश पराधीनता के कारण तत्कालीन भारतीय स्त्रियाँ घरों तक सिमट कर रह गयी थीं। पंडिता रमाबाई ने भारतीय समाज में महिलाओं, विशेषकर विधवाओं और अनाथ बालिकाओं की स्थिति सुधारने के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए कई संस्थाएं स्थापित कीं। 1889 में पुणे के निकट उन्होंने "शारदा सदन" की स्थापना की, जहाँ विधवाओं और परित्यक्ता को शिक्षा और प्रशिक्षण दिया जाता था। उन्होंने "मुक्ति मिशन" की स्थापना के माध्यम से समाज की अनाथ बालिकाओं को आश्रय, शिक्षा देकर और उन्हें आत्मनिर्भर बनाकर सम्मानपूर्ण जीवन प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनका योगदान भारतीय समाज में नारी शिक्षा, महिला सशक्तिकरण और सामाजिक सुधार की दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

8 अप्रैल 1857, बलिदान दिवस : क्रांतिवीर मंगल पांडे

उत्तर प्रदेश के बलिया में जन्में मंगल पांडेय भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रथम वीर क्रांतिकारियों में से एक हैं। वे ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना में सैनिक थे, लेकिन उनके मन में अंग्रेजी शासन के प्रति गहरा असंतोष था। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की शुरुआत में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। ब्रिटिश सेना द्वारा दिए जाने वाले गाय और सूअर की चर्बी लगे कारतूसों पर कड़ा विरोध जताते हुए 29 मार्च 1857 को उन्होंने कोलकाता के पास बैरकपुर छावनी में अंग्रेज अधिकारियों के खिलाफ विद्रोह कर दिया। उन्होंने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध भारतीय सैनिकों को उठ खड़े होने के लिए प्रेरित किया। यह घटना आगे चलकर 1857 के स्वातंत्र्य समर की प्रेरणा बनी। ब्रिटिश सेना द्वारा उन्हें गिरफ्तार कर 8 अप्रैल 1857 को फाँसी दे दी गई। हालांकि उनका जीवन अल्पकालीन था, लेकिन उनका साहस और बलिदान भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के लिए एक प्रेरणास्रोत बन गया। मंगल पांडे का योगदान भारतीय इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध संघर्ष की पहली चिंगारी प्रज्वलित कर निराशा से ग्रस्त भारतीय जनमानस में स्वतंत्रता की भावना को जागृत किया। उनका बलिदान आज भी हमें मातृभूमि के प्रति समर्पण और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा देता है।

8 अप्रैल , पुण्यतिथि : बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय

भारतीय साहित्य और राष्ट्रीय चेतना के महान प्रवर्तकों में से एक बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय एक प्रसिद्ध साहित्यकार, विचारक और राष्ट्रभक्त थे। उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से भारतीय समाज में राष्ट्रभक्ति और राष्ट्रीय स्वाभिमान की भावना को जागृत किया। उन्होंने अपने उपन्यास, निबंध और साहित्यिक कृतियों के माध्यम से भारतीय संस्कृति, समाज और राष्ट्रभक्ति की भावना को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। वे एक ब्रिटिश अधिकारी भी थे, एक समारोह में जब उन्होंने ब्रिटेन की महारानी के सम्मान में एक गीत गाया जाता देखा तो उनके राष्ट्रभक्त हृदय को बहुत दुःख हुआ, उन्होंने अपनी मातृभूमि माँ भारती के लिए एक ऐसा गीत रचा जो अनेक अवसरों पर गाया जा सके। उनकी वह रचना प्रसिद्ध गीत 'वन्दे मातरम्' है, जो अंग्रेजों के विरुद्ध बंगाल के संन्यासी विद्रोह पर आधारित उनके महान उपन्यास "आनन्दमठ" में प्रकाशित हुआ। यह गीत आगे चलकर भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का प्रेरणास्रोत बना और इसने लाखों देशभक्तों को स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी। आज "वन्दे मातरम्" भारत का राष्ट्रीय गीत है। बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय ने अपने साहित्य के माध्यम से भारतीय संस्कृति, राष्ट्रप्रेम और सामाजिक जागरण का महत्वपूर्ण कार्य किया। उनका योगदान भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और साहित्य दोनों के लिए अत्यंत प्रेरणादायक माना जाता है।

11 अप्रैल 1827, जयंती : महात्मा ज्योतिबा फुले

फूलों का व्यापार करने वाले परिवार में जन्में ज्योतिराव फुले उन्नीसवीं शताब्दी के महान समाज सुधारक, शिक्षाविद् और विचारक थे। ब्रिटिश पराधीनता काल में समाज में व्याप्त हो चुकी कुरीतियों और रुढियों के विरुद्ध उन्होंने भारतीय जनमानस को जागृत किया। उन्होंने सामाजिक समानता, शिक्षा और मानवाधिकारों के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया। उस समय समाज में व्याप्त जाति–भेद, अस्पृश्यता और अज्ञानता के विरुद्ध संघर्ष कर सामाजिक समरसता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया। उन्होंने सबसे पहले अपनी धर्मपत्नी सावित्रीबाई फुले को शिक्षित कर 1848 में पुणे में बालिकाओं के लिए विद्यालय शुरू किया। उनकी धर्मपत्नी सावित्रीबाई फुले ब्रिटिश काल में पहली भारतीय महिला शिक्षिकाओं में से एक बनीं। महात्मा ज्योतिराव फुले ने समाज में फैली जाति–प्रथा और ऊँच–नीच के भेदभाव जैसी बुराइयों को दूर करने में योगदान दिया। 1873 में उन्होंने 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की, जिसका उद्देश्य समाज में समानता, न्याय और भाईचारे की भावना को बढ़ावा देना था। एक लेखक के रूप में भी उन्होंने समाज में जागरूकता और वंचित वर्ग की सामाजिक स्थिति सुधारने के लिए अथक परिश्रम किया। उनका योगदान आज भी समाज को आत्मनिर्भर, समरसतापूर्ण और सशक्त बनने की प्रेरणा देता है।

14 अप्रैल 1891, जयंती : डॉ. भीमराव रामजी आम्बेडकर

डॉ. भीमराव रामजी आम्बेडकर आधुनिक भारत के महान समाज सुधारक, विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री और संविधान निर्माता थे। मुस्लिम आक्रान्ताकाल में भारत के सामाजिक पतन और ब्रिटिश काल में अंग्रेजों की फूट डालो नीति से उपजी जातिगत भेदभाव और अस्पृश्यता जैसी कुरीतियों का उन्होंने अपने जीवन में सामना किया और इससे व्यथित होकर उनके मन में समानता और न्याय के लिए संघर्ष करने की दृढ़ प्रेरणा पैदा हुई और उन्होंने इसके लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। वे भारतीय संविधान सभा की प्रारूप समिति के अध्यक्ष थे। संविधान में समानता, स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों को विशेष स्थान दिए जाने में उनका विशिष्ट योगदान रहा। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि संविधान के माध्यम से उन्होंने अस्पृश्यता को समाप्त करने का मार्ग प्रशस्त कर देश के वंचित वर्ग के अधिकारों की रक्षा के लिए शिक्षा, संगठन और आंदोलन पर बल दिया। उनका प्रसिद्ध संदेश था–"शिक्षित बनो, संगठित रहो और संघर्ष करो।" भारत पाक विभाजन पर उन्होंने मुस्लिम दृष्टिकोण पर अपना स्पष्ट मत रखा जो उनकी पुस्तक 'पाकिस्तान या भारत का विभाजन' में उल्लखित है। उनके विचार आज भी समाज को समानता और न्याय की दिशा में प्रेरित करते हैं।

वसंत ऋतु : नवीनीकरण, संतुलन और शुद्धिकरण का आयुर्वेदिक काल

– डॉ. सुनेत्री सिंह, एम डी आयुर्वेद एवं निदेशक डॉ. सुनेत्री (आयुर्वेदा)

वसंत ऋतु का समय सामान्यतः मार्च के मध्य से मई के मध्य तक माना जाता है। यह ऋतु शीत से ग्रीष्म की ओर संक्रमण का महत्वपूर्ण काल है। आयुर्वेद के अनुसार इस समय पृथ्वी और वायु तत्व की प्रधानता रहती है। प्रकृति नवपल्लव, पुष्पों की सुगंध और मध्यम उष्णता से आच्छादित हो उठती है। यह मौसम बाहरी रूप से आनंद, स्फूर्ति और नवीन ऊर्जा का प्रतीक है, किंतु आंतरिक स्तर पर शरीर में गहन जैविक परिवर्तन भी इसी काल में घटित होते हैं।

दोषों की गतिशीलता और अग्नि पर प्रभाव : आयुर्वेद के अनुसार शीत ऋतु में कफ दोष का संचय होता है। शीत, स्निग्ध और गुरु गुणों के कारण कफ शरीर में एकत्रित हो जाता है। जैसे ही वसंत में तापमान बढ़ता है, यह संचित कफ द्रवित होकर प्रकोप अवस्था में आ जाता है। परिणामस्वरूप नाक बंद होना, सर्दी–जुकाम, खांसी, एलर्जी, गले में कफ जमना तथा श्वसन संबंधी समस्याएं अधिक देखने को मिलती हैं।

कफ की अधिकता जठराग्नि को मंद कर देती है। पाचन क्षमता घटती है, अपच की समस्या उत्पन्न होती है तथा शरीर में "आम" (अवांछित विषैले तत्व) का संचय होने लगता है। यही कारण है कि वसंत ऋतु में शरीर अपेक्षाकृत अधिक संवेदनशील हो जाता है।

वसंत ऋतु का समग्र स्वास्थ्य पर प्रभाव : सर्दी से वसंत में परिवर्तन केवल शारीरिक ही नहीं, बल्कि मानसिक स्तर पर भी प्रभाव डालता है।

♦ कफ वृद्धि : शरीर में भारीपन, सुस्ती और आलस्य।

♦ मंद अग्नि : गैस, अपच और भूख में कमी।

♦ एलर्जी प्रवृत्ति : परागकणों के कारण श्वसन विकार।

♦ ऊर्जा में उतार–चढ़ाव : कुछ लोगों में उत्साह और स्फूर्ति, तो कुछ में जड़ता।

♦ मानसिक प्रभाव : यह मौसम रचनात्मकता और उत्साह को बढ़ावा देता है, किंतु असंतुलन होने पर चिड़चिड़ापन भी उत्पन्न हो सकता है।

वसंत ऋतु में क्या करें? - आहार संबंधी सुझाव : इस ऋतु में हल्का, रुक्ष, उष्ण तथा कफशामक आहार ग्रहण करना चाहिए। कटु, तिक्त और कषाय रस प्रधान भोजन लाभकारी माना गया है।

लाभकारी पेय और घरेलू उपाय -

1. कफ संतुलन पेय सामग्री : 1 छोटा चम्मच शहद, 2 छोटा चम्मच अदरक का रस, 1 चुटकी हल्दी।

विधि : गुनगुने जल में मिलाकर प्रतिदिन प्रातः खाली पेट सेवन करें। यह कफ को शांत कर अग्नि को प्रबल बनाता है।

2. कफ शमन चाय : सामग्री – तुलसी पत्ते, दालचीनी, काली मिर्च।

विधि : 5 मिनट तक उबालकर छान लें और गर्म ही पिएँ। यह श्वसन तंत्र को सशक्त बनाती है।

3. पित्त संतुलन पेय : सामग्री – 1 चम्मच गुलाब जल, 2 चम्मच सौंफ चूर्ण।

विधि : ठंडे जल में मिलाकर मध्याह्न में सेवन करें। यह वसंत के उष्ण दिनों में पित्त को संतुलित करता है।

4. पाचन सहायक : भोजन के पश्चात भुनी हुई सौंफ और सेंधा नमक की थोड़ी मात्रा चबाना लाभकारी है।

त्वचा की देखभाल : वसंत में त्वचा को पुनर्जीवित करने के लिए प्राकृतिक उबटन अत्यंत उपयोगी है।

सामग्री : चंदन पाउडर, हल्दी पाउडर, बेसन।

विधि : गुलाब जल में मिलाकर स्नान से पूर्व लेप करें।

यह त्वचा को शुद्ध, कोमल और संतुलित बनाता है।

जीवनशैली (विहार) : ♦ नियमित व्यायाम ♦ प्रातःकालीन भ्रमण ♦ उद्वर्तन (शुष्क चूर्ण से मालिश) ♦ दिन में निद्रा का त्याग ♦ प्राकृतिक वातावरण में समय व्यतीत करना ♦ तैलीय एवं भारी भोजन से परहेज।

वसंत ऋतु में व्यायाम विशेष रूप से आवश्यक है, क्योंकि यह कफ को नियंत्रित करने में सहायक होता है।

पंचकर्म और शुद्धिकरण : वसंत ऋतु शारीरिक शुद्धि का सर्वोत्तम काल माना गया है। इस समय संचित कफ को बाहर निकालना स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यंत लाभकारी है।

♦ वमन कर्म : कफ निष्कासन हेतु प्रमुख उपचार।

♦ नस्य : सिर एवं श्वसन मार्ग की शुद्धि।

♦ उद्वर्तन : मेद एवं कफ शमन।

पंचकर्म के माध्यम से शरीर को ग्रीष्म ऋतु में सहज प्रवेश के लिए तैयार किया जा सकता है।

आयुर्वेद का मूल संदेश स्पष्ट है - ऋतु के अनुरूप जीवनशैली ही दीर्घकालीन स्वास्थ्य की आधारशिला है। वसंत में शरीर को शुद्ध करें, मन को प्रसन्न रखें और प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करें। 'ऋतु के साथ तालमेल ही आरोग्य का वास्तविक सूत्र है।'

पंच परिवर्तन की प्रेरक कहानी

– प्रकाशवीर, पूर्व प्रधानाचार्य, शिशुमंदिर

एक छोटे से गांव में अभय नाम का एक बालक रहता था। एक दिन विद्यालय में आचार्य जी (अध्यापक महोदय) ने भैया/ बहनों (बच्चों) को बताया कि समाज को श्रेष्ठ बनाने के लिए हमें अपने जीवन में पंच परिवर्तन (पर्यावरण संरक्षण, कुटुंब प्रबोधन, स्व का आत्मबोध, सामाजिक समरसता तथा नागरिक कर्तव्य) को अपनाना चाहिए।

यह समझकर अभय ने निश्चय किया कि वह इन पांचो बातों को अपने जीवन में अपनाते हुए परिवार व समाज में भी इसके लिए प्रयास करेगा।

पहला परिवर्तन : पर्यावरण संरक्षण अभय ने अपने मित्रों के साथ मिलकर गांव में पेड़ लगाना शुरू किया। उसने लोगों को समझाया कि प्रकृति हमारी माता है, पेड़, जल और भूमि की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है, क्योंकि जल है तो कल है। धीरे–धीरे गांव हरियाली व खुशहाली से भरने लगा।

दूसरा परिवर्तन - कुटुंब प्रबोधन अभय ने घर में सबको साथ बैठाकर भोजन करने और प्रतिदिन कुछ समय सामूहिक रूप से परिवार के साथ बिताने की प्रेरणा दी। साथ ही सामूहिक बैठकर भाषा, भोजन, भजन, भवन, भेष, भ्रमण में भारतीयता के महत्व विषय पर

चर्चा होने लगी। जिससे धीरे–धीरे परिवार में प्रेम, सम्मान और संस्कार बढ़ने लगा।

तीसरा परिवर्तन - स्व का आत्मबोध : अभय ने अपने गुरु जी से भारतीय संस्कृति इतिहास और महापुरुषों के बारे में जाना। अपने देश के ज्ञान विज्ञान, हस्तकला, शिल्पकला व तकनीकी आदि को समझकर उसे गर्व के साथ अपनाते हुए परिवार व मित्रों के साथ चर्चा में बताने लगा कि यह सब हमारी 'महान भारतीय ज्ञान परंपरा' का भाग है। अतः हमें अपने संस्कारों और संस्कृति पर गर्व होना चाहिए।

चौथा परिवर्तन - सामाजिक समरसता : अभय ने गांव के सभी लोगों को एक साथ मिलकर बिना किसी भेदभाव (क्षेत्रवाद, भाषावाद, जातिवाद, ऊंच– नीच, गरीब– अमीर आदि) के साथ त्यौहार मनाने और सार्वजनिक स्थलों (कुंआ, मंदिर, धर्मशाला आदि) का मिलकर प्रयोग करना चाहिए। उन्हें एक दूसरे की सहायता करने के लिए प्रेरित किया और समझाया कि हम सब एक ही समाज के अंग है।

पांचवा परिवर्तन - नागरिक कर्तव्य : अभय ने गांव में स्वच्छता का अभियान चलाया, लोगों को नियमों का पालन करने और समाज की भलाई के कार्य करने की प्रेरणा दी। कुछ ही समय में गांव का वातावरण बदल गया, चारों ओर स्वच्छता, हरियाली, परिवारों में प्रेम और समाज में भाईचारा दिखाई देने लगा।

अभय की इस सार्थक पहल से आए बदलाव को देखते हुए आचार्य जी ने कहा,– कि प्रत्येक व्यक्ति द्वारा अपने जीवन में उपरोक्त बातों को अपनाने से ही समाज और राष्ट्र दोनों शक्तिशाली बनते हैं, और हम भी व्यक्तिगत रूप से तभी सुखी रह सकते हैं जब हमारा समाज व राष्ट्र सम्पन्न व शक्तिशाली होगा।

बेटियों की शादी में मदद कर रहे अमरोहा के किसान

उत्तर प्रदेश के अमरोहा में एक किसान एक ऐसा नेक कार्य कर रहे है जिससे उनकी चर्चा हर तरफ हो रही है। जी हां, अमरोहा के गांव मिलक मेहम्मदी के रहने वाले विजयवीर सिंह गरीब परिवारों की बेटियों की शादी में अपनी तरफ से नेग के रूप में गाय का दूध और उससे बने उत्पाद जैसे पनीर, दही और छाछ (मट्ठा) निशुल्क देते हैं। इसके अलावा शादी या अन्य शुभ अवसर पर पूजा के लिए घी भी उपलब्ध कराते हैं। अब तक वे छह गरीब परिवारों की बेटियों की शादी में यह सामग्री अपने खर्च पर दे चुके हैं। इसके लिए परिवार को शादी से करीब एक सप्ताह पहले उन्हें सूचना देनी होती है। विजयवीर सिंह ने यह काम किसी की प्रेरणा से नहीं, बल्कि अपनी सोच और समाज के प्रति जिम्मेदारी को देखते हुए शुरू किया है। इसके साथ ही विजयवीर सिंह फिलहाल नौ गाय और तीन भैंस पालते हैं। इसके साथ ही उन्होंने गांव में गो सेवा के लिए एक छोटा आश्रम भी शुरू किया है। उनका कहना है कि अगर किसी को कहीं निराश्रित गाय मिले तो उसे उनके आश्रम में लाकर छोड़ सकते हैं, जहां उसकी सेवा की जाएगी।

मुरादाबाद की 12 महिलाओं ने खड़ा किया लाखों का व्यवसाय

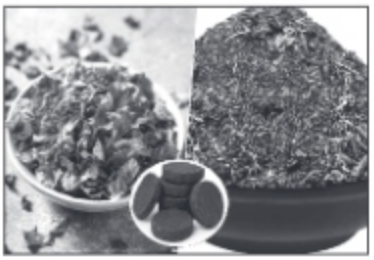

सोचिए जिसे हम बेकार समझकर फेंक देते हैं। उसी से अगर हर महीने 25 हजार रुपये की कमाई होने लगे तो? जी हाँ, मुरादाबाद की 12 महिलाओं ने ऐसा ही कमाल कर दिखाया है। गाय के गोबर और फूल–पत्तियों से ये महिलाएं बना रही हैं खास 'हवन टिकली', जिसकी नवरात्रि में जबरदस्त डिमांड है। पीतल नगरी मुरादाबाद में अब सिर्फ पीतल ही नहीं बल्कि ईको–फ्रेंडली स्वरोजगार की खुशबू भी फैल रही है। यहां 'शुभ स्वयं सहायता समूह' की 12 महिलाओं ने मिलकर पारंपरिक संसाधनों को आधुनिक बाजार से जोड़ दिया है। समूह की शुरुआत पूजा यादव ने की और आज प्रत्येक महिला अपनी जिम्मेदारी निभा रही है। कोई गाय के गोबर को सुखाकर तैयार करती है, तो कोई सूखे फूल–पत्तियों और हवन सामग्री को मिलाकर सुंदर टिकली बनाती है। जैसे–जैसे नवरात्रि नजदीक आती है। इनकी हवन टिकली की मांग तेजी से बढ़ जाती है। महिलाएं स्थानीय बाजार में स्टॉल लगाकर भी बेच रही हैं और साथ ही सोशल मीडिया व फोन कॉल के जरिए ऑनलाइन ऑर्डर भी ले रही हैं। यानी गांव का हुनर अब डिजिटल बाजार तक पहुंच चुका है। इस काम से अब हर महिला महीने के 20 से 25 हजार रुपये तक कमा रही है। सबसे अच्छी बात यह महिलाएं दूसरी महिलाओं को भी यह काम सिखाकर रोजगार से जोड़ रही हैं।मुरादाबाद की ये महिलाएं साबित कर रही हैं कि अगर हौंसला मजबूत हो तो गोबर और फूल–पत्तियां भी बन सकती हैं एक सफल स्टार्टअप।

10 हजार से शुरुआत, बेटी ने बनाया लाखों का कारोबार

उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद में एक युवा महिला ने अपने पिता के सपने को पूरा करने के लिए छोटे से निवेश से कारोबार शुरू किया और आज उसे लाखों तक पहुंचा दिया है, जी हां, मुरादाबाद की पीतल कारोबारी आंचल भटनागर पिछले तीन से चार साल से इस क्षेत्र में काम कर रही हैं। उन्होंने अपने पिता के सपने को पूरा करने के लिए पीतल का कारोबार शुरू किया। शुरुआत में उन्होंने केवल 10 हजार रुपए से अपना काम शुरू किया था। आंचल ने बताया कि उन्होंने एमबीए किया है, लेकिन नौकरी करने के बजाय अपना खुद का कारोबार आगे बढ़ाने का फैसला किया। आज उनका कारोबार धीरे–धीरे बढ़ रहा है और उनका टर्नओवर 10 से 15 लाख रुपए तक पहुंच चुका है। उन्होंने बताया कि वह होम डेकोर और पूजा से जुड़े पीतल के कई तरह के उत्पाद बेचती हैं।

कुछ सामान उनकी फैक्ट्री में तैयार होता है, जबकि कुछ बाहर बनवाया जाता है। उनकी फैक्ट्री में 5 से 6 लोग काम करते हैं, वहीं कुछ लोग घर से भी काम करते हैं। आंचल का कहना है कि उनके उत्पादों की मांग पूरे भारत में है। आगे चलकर वह अपने कारोबार में ब्रास कटलरी आइटम और नए होम डेकोर प्रोडक्ट्स भी जोड़ना चाहती हैं, ताकि अपने बिजनेस को और आगे बढ़ा सकें। अगर इंसान मेहनत और आत्मविश्वास के साथ अपने लक्ष्य की ओर बढ़े, तो छोटी सी शुरुआत भी बड़ी सफलता में बदल सकती है

पर्यावरण संरक्षण के साथ विकास की पहल

आज के समय में विकास के साथ–साथ पर्यावरण की सुरक्षा भी उतना ही आवश्यक हो गयी है। इसी सोच के तहत अब किसी भी निर्माण कार्य में पेड़ों की कटाई के बदले ज्यादा से ज्यादा पौधे लगाने पर जोर दिया जा रहा है, ताकि प्रकृति का संतुलन बना रहे। इसी दिशा में मथुरा के मिलिट्री स्टेशन में 99 आर्टिलरी ब्रिगेड के मुख्यालय में निर्माण कार्य के लिए कुछ पेड़ों को काटने की अनुमति मांगी गई थी। वर्ष 2025 में सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर कर 60 पेड़ों को काटने की अनुमति मांगी गई थी। सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर सेंट्रल इम्पावर्ड कमेटी (CEC) ने इस मामले की जांच की और अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। दरअसल, ताजमहल के आसपास लगभग 50 किलोमीटर के दायरे में आने वाले 10,400 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को ताज ट्रेपेजियम जोन (TTZ) कहा जाता है, जहां पर्यावरण की सुरक्षा के लिए पेड़ काटने पर सख्त नियंत्रण रखा गया है। मिलिट्री स्टेशन में पहले चरण में बैरक, बैगेज रूम, डाइनिंग हॉल, कुक हाउस, ब्रिगेड मुख्यालय के लिए स्टोरेज, आर्मरी, जेसीओ के लिए आवास और वाहन शेड जैसी सुविधाएं विकसित की जानी हैं। इसके लिए 60 पेड़ों को हटाने की अनुमति मांगी गई थी। हालांकि जांच के दौरान यह पाया गया कि सभी पेड़ों को काटने की जरूरत नहीं है। निरीक्षण में पता चला कि 16 पेड़ों को बचाया जा सकता है, इसलिए अब केवल 44 पेड़ों को काटने की अनुमति देने का अनुरोध किया गया...पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखते हुए कमेटी ने सख्त शर्तें भी तय की हैं। इसके अनुसार पेड़ काटने से पहले परिसर में कम से कम 550 पौधे लगाने होंगे और उनकी पांच साल तक देखभाल करनी होगी। इसके अलावा वन विभाग की सलाह से एक हजार देसी प्रजातियों के पौधे भी लगाए जाएंगे और उनकी भी पांच वर्षों तक देखरेख की जाएगी। ताज ट्रेपेजियम जोन अथॉरिटी यह सुनिश्चित करेगी कि कोर्ट की सभी शर्तों का पूरी तरह पालन हो। अगर तय संख्या से ज्यादा कोई पेड़ काटा गया तो प्रति पेड़ एक लाख रुपये का जुर्माना लगाया जाएगा। इस तरह यह निर्णय विकास के साथ–साथ पर्यावरण संरक्षण को भी प्राथमिकता देने का एक सकारात्मक उदाहरण माना जा रहा है।

तालाबों को प्लास्टिक मुक्त बनाने की पहल

पर्यावरण की सुरक्षा और जल स्रोतों को स्वच्छ रखना आज समय की बड़ी जरूरत बन गई है। इसी उद्देश्य से जिला पंचायती राज विभाग ने तालाबों को प्लास्टिक मुक्त बनाने की दिशा में एक नई पहल शुरू की है। जी हां, जिला पंचायती राज विभाग ने इस समस्या को दूर करने के लिए एक नई योजना बनाई है। योजना के तहत जिले के नौ विकास खंडों– बरनाहल, करहल, किशनी, सुल्तानगंज, मैनपुरी, बेवर, घिरोर, कुरावली और जागीर की एक–एक ग्राम पंचायत में 100 तालाबों को चिन्हित किया जाएगा। इन तालाबों के आसपास सफाई अभियान चलाकर प्लास्टिक और पॉलिथीन को हटाया जाएगा, ताकि पानी साफ और सुरक्षित रह सके। इस अभियान में ग्राम पंचायत, ग्रामीण और स्कूली छात्र भी मिलकर हिस्सा लेंगे। लोगों को जागरूक किया जाएगा कि वे तालाबों में कचरा न डालें और पर्यावरण को सुरक्षित रखें। इसके अलावा जिन तालाबों में गांव की नालियां गिरती हैं, वहां नालियों के आखिरी छोर पर जाली लगाई जाएगी, ताकि गंदगी और प्लास्टिक तालाब में न पहुंच सके। तालाबों के आसपास कूड़ेदान भी रखे जाएंगे, जिससे लोग प्लास्टिक सही जगह पर डाल सकें। जिला पंचायती राज अधिकारी डॉ. अवधेश सिंह का कहना है कि अगर यह पहल सफल होती है, तो आगे चलकर जिले के बाकी तालाबों को भी प्लास्टिक मुक्त बनाया जाएगा। अगर हम सभी मिलकर प्रकृति और जल स्रोतों की रक्षा करें, तो पर्यावरण को स्वच्छ और सुरक्षित बनाया जा सकता है।

जाट बटालियन के जवान ने निभाया पिता का कर्तव्य

उत्तर प्रदेश के बागपत जिले के काठा गांव में एक शादी में फौजी भाईचारे की ऐसी मिसाल देखने को मिली जिसनें हर किसी को भावुक कर दिया। जी हां, यहां दिवंगत हवलदार हरेंद्र सिंह के फौजी साथियों ने उनकी बेटी की शादी में पहुंचकर पिता के दायित्व को निभाया जानकारी के अनुसार, बागपत के काठा गांव में दिवंगत हवलदार हरेंद्र सिंह की बेटी प्राची की शादी थी। घर में खुशी का माहौल था, लेकिन बेटी के सिर पर पिता का साया नहीं था। ऐसे में हरेंद्र सिंह के फौजी साथियों ने तय किया कि शादी में किसी भी तरह की कमी नहीं रहने दी जाएगी। शादी वाले दिन जब कई फौजी जवान वर्दी में गांव पहुंचे तो लोग हैरान रह गए। ये कोई सामान्य मेहमान नहीं थे, बल्कि दुल्हन के पिता के साथी थे, जो उनकी बेटी की शादी में शामिल होने आए थे। 21 जाट रेजिमेंट के कैप्टन, सूबेदार, नायब सूबेदार और हवलदार समेत कई जवान शादी की तैयारियों में जुट गए। उन्होंने घराती और बारातियों की सेवा की और शादी की सभी रस्मों को पूरी जिम्मेदारी के साथ निभाया। जब मंडप में कन्यादान का समय आया तो फौजी साथियों ने पिता बनकर यह पवित्र रस्म निभाई। इसके साथ ही उन्होंने मिलकर बेटी के कन्यादान के लिए करीब 6 लाख से अधिक रुपये का सहयोग भी दिया। सात फेरों के दौरान भी फौजी साथी बेटी के साथ खड़े रहे और विदाई के समय माहौल बेहद भावुक हो गया। दरअसल हवलदार हरेंद्र सिंह अरुणाचल प्रदेश में तैनात थे और वर्ष 2020 में रिटायर हुए थे। लेकिन कुछ समय बाद एक सड़क हादसे में उनकी मौत हो गई। उनके निधन के बाद परिवार पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा था, लेकिन उनके फौजी साथियों ने परिवार का साथ नहीं छोड़ा। दुल्हन की मां अमृता देवी ने बताया कि बेटी की शादी में फौजियों ने पूरा सहयोग किया। उन्होंने कन्यादान के लिए लाखों रुपये दिए और सभी रस्में भी निभाई।

नारी गौरव : कुलवंती रावत नेपाल में हुई सम्मानित

समाज में महिलाओं की प्रतिभा और योगदान को पहचानना और उनका सम्मान करना हर नागरिक का कर्तव्य है। जब किसी महिला की उपलब्धि को देश–विदेश में सराहा जाता है, तो वह केवल उस व्यक्ति का नहीं बल्कि पूरे समाज और देश का सम्मान होता है। इसी कड़ी में उत्तराखण्ड के उत्तरकाशी जिले की कवयित्री और शिक्षिका कुलवंती रावत को अंतरराष्ट्रीय मंच पर सम्मानित किया गया है। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर उत्तराखण्ड के उत्तरकाशी की कवयित्री एवं शिक्षिका कुलवंती रावत को नेपाल में "स्त्री शक्ति सम्मान" से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें महिलाओं की प्रतिभा को प्रोत्साहित करने और साहित्य के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए दिया गया।

यह कार्यक्रम नेपाल–भारत मैत्री, मिथिला और अवध सांस्कृतिक पर्यटन के विकास, देवनागरी लिपि के संरक्षण तथा हिंदी और नेपाली भाषा को मैत्री भाषा के रूप में बढ़ावा देने के उद्देश्य से आयोजित किया गया था। इस अवसर पर शब्द प्रतिभा बहुक्षेत्रीय सम्मान फाउंडेशन, नेपाल ने कुलवंती रावत सहित नेपाल, भारत और विश्व के सात देशों की लगभग 300 महिला कवयित्रियों, लेखिकाओं, समाज सेविकाओं और शिक्षिकाओं को ई–प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। कुलवंती रावत उत्तरकाशी जिले की जानी–मानी लेखिका, कवयित्री और शिक्षिका हैं। उनकी सैकड़ों रचनाएं विभिन्न पत्रिकाओं और साहित्यिक संकलनों में प्रकाशित हो चुकी हैं। कुलवंती रावत को देश–विदेश में कई प्रतिष्ठित सम्मान मिल चुके हैं। सम्मान प्राप्त करने के बाद उन्होंने संस्था का धन्यवाद करते हुए कहा कि शब्द प्रतिभा फाउंडेशन साहित्य सृजन करने वालों के लिए एक प्रेरणा बनकर सामने आया है और यह संस्था लगातार कवियों, लेखकों, शिक्षकों और साहित्यकारों को प्रोत्साहित कर रही है।

नरेंद्र मोदी स्टेडियम पर भारतीय टीम ने रचा इतिहास

– श्रेयांशी, शोध छात्रा, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय (मेरठ)

भारतीय टीम ने रविवार को दुनिया के सबसे बड़े क्रिकेट स्टेडियम में इतिहास बनाया। भारतीय टीम लगातार दो बार व कुल तीन बार टी 20 विश्व कप जीतने वाली पहली टीम बनी। इससे पहले किसी भी टीम ने घर में खेलते हुए टी 20 विश्व कप की इस ट्राफी को नही जीत पाने के इतिहास को नरेंद्र मोदी स्टेडियम में बदल डाला। भारतीय टीम ने अपनी आठवीं आए सी सी ट्राफी अपने नाम की। भारतीय खिलाड़ी इस जीत के साथ पूरे मैदान में वन्देमातरम के साथ तिरंगा फहराने लगे। जिस मैदान पर भारत को 2023 में सबसे ज्यादा दुख मिला वहा खुशियों का अंबार लग गया स्टेडियम में मौजूद गृहमंत्री अमित शाह खुशी से झूम उठे, मैदान में सुनील गावस्कर नाचने लगे। 2023 में वनडे विस्व कप में भारत को इसी मैदान पर आष्ट्रेलिया के विरुद्ध बड़ी बुरी हार का सामना करना पड़ा था। इस बार भी भारतीय टीम को इसी मैदान पर सुपर –8 के मैच में दक्षिण अफ्रीका के हाथ भी शर्मनाक हार मिली। लेकिन फाइनल में संजू सैमसन (89) ईशान किशन (54) अभिषेक शर्मा(52) शिवम दुबे (26) की पारियों से भारत ने न्यूजीलैंड के सामने सात विकेट पर 255 जैसा हिमालय जैसा स्कोर खड़ा किया। भारत के लिए सबसे ज्यादा 4 विकेट जसप्रीत बुमराह ने लिए। अक्षर पटेल ने तीन विकेट चटकाए। भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने भारतीय टीम को बधाई देते हुए कहा कि 'चैंपियनस...आई सीसी पुरुष टी – 20 विश्व कप जीतने पर भारतीय टीम को बधाई। यह शानदार जीत जबरदस्त स्किल्स, पक्के इरादे और टीम वर्क को दिखाती है। उन्होने पूरे टूर्नामेंट में जबरदस्त हिम्मत दिखाई। इस जीत ने हर भारतीय के दिल को गर्व व खुशी से भर दिया है बहुत बढ़िया टीम इंडिया'।

वास्तव में यह जीत प्रत्येक भारतीय की जीत है। अगर भारतीय टीम को धुरंधर 3 के नाम से पुकारा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नही होगी।

दिनों का फेर

जंगल में गुलाब का एक पौधा था। पौधे पर एक फूल खिला हुआ था। फूल की महक से सारा जंगल सुगंधित था। जंगल में रहने वाले जंतु उस फूल की प्रशंसा करते नहीं थकते थे। गुलाब का फूल मन ही मन आनंदित हो उठता था। उस फूल के पास ही एक पत्थर का टुकड़ा था। जानवर पत्थर को ठोकर भी मारते तो कुछ नजर से घूरते चले जाते थे। एक दिन गुलाब के उस फूल ने उस पत्थर को घृणा की दृष्टि से देखते हुए कहा, ना जाने क्यों तुम मेरे पैर के नीचे पड़े हो। आज तक तुम्हारी ओर किसी ने प्यार से नहीं देखा।

पत्थर ने धीमे स्वर में उत्तर दिया, मेरे भाई, यह तो समय की बात है। हो सकता है, आज जो तुम्हारी बड़ाई करते हैं, वे कल मेरी बड़ाई करें। यह सुनकर गुलाब का फूल खूब हंसा और उसकी हंसी उड़ाते हुए बोला, तुम्हारी सारी जिंदगी भी इसी तरह मेरे चरणों के नीचे पड़े-पड़े बीत जाएगी। फूल की बात सुनकर पत्थर कुछ न बोला।

अगले दिन एक मूर्तिकार उधर से निकला उसने पत्थर को देखा तो रुक गया। उस पत्थर को उठाकर झोले में डाल लिया और उसे घर ले आया। मूर्तिकार ने पत्थर को बड़ी लगन से तराश कर देवता की मूर्ति तैयार की। उस पत्थर की मूर्ति की पूजा होने लगी। संयोग से एक दिन एक आदमी ने गुलाब के फूल को तोड़कर पत्थर की मूर्ति के चरणों में डाल दिया। पत्थर ने तुरंत उस फूल को पहचान लिया। फूल ने भी उस पत्थर की मूर्ति को देखकर पहचान लिया। तब पत्थर ने फूल से कहा; यही दिनों का फेर है।

करियर

रोज़गार विज्ञापन, इंटर्नशिप एवं परीक्षा कार्यक्रम

(Employment Advertisements, Internships & Examination Schedule: 30 अप्रैल 2026)

~Manas Verma

क्रम संख्या (Serial No.)	अंतिम तिथि / परीक्षा तिथि (Closing / Exam Date)	विज्ञापन / परीक्षा का नाम (Advertisement / Exam Name)	टिप्पणी (Remarks)
1	06 अप्रैल 2026	Jaipur SEZ – Assistant Development Commissioner	ग्रुप 'B' पद, प्रत्यक्ष भर्ती।
2	13 अप्रैल 2026	Office of Principal Scientific Advisor – Scientist G	वरिष्ठ वैज्ञानिक पद।
3	15 मई 2026	National Board of Examinations – Joint Director	*अंतिम तिथि अवधि से बाहर।*
4	अप्रैल 2026 (विभिन्न तिथियाँ)	SSC GD Constable Physical Test	क्षेत्रवार शेड्यूल जारी।
5	अप्रैल 2026	State Level Police / Teaching Exams	राज्य अनुसार तिथियाँ भिन्न।
6	11 मई – 31 मई 2026	CUET (UG) 2026 – NTA	*मुख्य परीक्षा, अवधि से थोड़ा बाहर।*
7	24 मई 2026	UPSC Civil Services Preliminary Exam 2026	*महत्वपूर्ण राष्ट्रीय परीक्षा।*

दो पीढ़ियां

– डॉ. शुचि चौहान

बरामदे में हल्की धूप उतर आई थी। सर्दियों की सुबह थी और वहां रखी मटकी के पास बैठी दादी सिंवइयां तोड़ रही थीं। पास ही कुर्सी पर बैठी उनकी पोती अनन्या मोबाइल में कुछ देख रही थी और बीच–बीच में मुस्कुरा रही थी।

दादी ने चश्मे के ऊपर से झांकते हुए पूछा, "इतनी हंसी क्यों आ रही है, क्या देख रही है?" अनन्या ने बिना सिर उठाए कहा, "अरे दादी, आदित्य का मैसेज है।"

दादी मुस्कुराईं। "अच्छा... नाम भी लेती है तू जंवाई का?" उन्होंने उलाहना सा दिया। अनन्या ने चौंककर दादी की ओर देखा और बोली– "अरे दादी, फिर कैसे बुलाऊं?"

दादी ने मीठी झिड़की देते हुए कहा– "पागल है तू, पति का भी कोई नाम लिया जाता है, हमारे जमाने में तो कोई नहीं लेता था।" अनन्या को उत्सुकता हुई। उसने मोबाइल एक ओर रख दिया और बोली– "सच में? फिर आप दादाजी को कैसे बुलाती थीं?" दादी हंसते हुए बोलीं– "बस.. इशारों में...। तब कोई कहता था 'सुनते हो', कोई कहता 'ओ जी, सुनो जी', कोई बच्चों के नाम से बुलाता– 'मुन्ना के पापा'।"

अनन्या को यह सुनकर मजा आया। "अगर किसी को नाम लेना ही पड़ जाता था तो?" उसने पूछा। दादी की आँखों में शरारत चमक उठी। "अरे, तब तो बड़ी बुद्धि लगानी पड़ती थी। एक बार जनगणना वाले आए, घर में कोई नहीं था। उन्होंने तेरे दादाजी का नाम पूछा तो मैं बार–बार उन्हें अपनी नथ दिखाती और चुनरी का रंग।" अनन्या को हंसी आ गई और बोली – "नत्थूलाल... आपने उन्हें समझा दिया... आप तो बहुत स्मार्ट हो।" दादी भी हंसने लगीं। फिर बोलीं, "अपने यहां धनतेरस की रात को वह एक परम्परा है न, जिसमें घर की सफाई के बाद सूप में कचरा भरकर बाहर फेंकते हैं और कहते हैं, निकल दलिद्दर, ईश्वर आए।"

अनन्या ने उत्सुकता से कहा, "हॉ, तो?" दादी बोलीं, "अब सोच... किसी के पति का नाम ही ईश्वर हो! मेरे मौसा जी का नाम ईश्वर था, तो मौसी बोलती थीं– निकल दलिद्दर, वेई (वे ही) आए।" "वेई?" अनन्या ने आँखें गोल कर लीं।

हाँ, दादी हँसी दबाते हुए बोलीं– "पति का नाम जो नहीं लेना था।" दोनों फिर हंसने लगीं। दादी ने आगे जोड़ा– "और आरती में ओम जय जगदीश हरे... जिनके पतियों का नाम जगदीश होता, वे धीरे से कहतीं– ओम जय वेई हरे।" अनन्या अब सचमुच हँसते–हँसते दोहरी हो गई और बोली– "दादी, आप लोग तो कमाल थे। इतनी क्रिएटिविटी।" दादी ने सिंवइयाँ समेटते हुए कहा– "बेटा, वो समय अलग था... उसमें संकोच था, पर मिठास भी बहुत थी।" कुछ पल के लिए दोनों चुप हो गईं। आंगन में अमरूद के पेड़ से एक पत्ता गिरा और हवा में डोलता हुआ जमीन पर टिक गया।

तभी अनन्या ने सकुचाते हुए कहा– "लेकिन दादी.. आजकल तो नाम लेना सामान्य बात है। ए जी, ओ जी कहना अच्छा थोड़े ही लगता है और फिर बात बराबरी की भी तो है...।"

दादी अब थोड़ी गम्भीर हो गईं। उन्होंने अनन्या की ओर देखा और बोलीं– "हाँ, समय बदल गया है। नाम लेना गलत नहीं है। पर एक बात ध्यान रखना... पति–पत्नी का रिश्ता बराबरी का नहीं, पूरकता का होता है। परमात्मा सिर्फ स्त्री को भी बना सकते थे या फिर सिर्फ पुरुष को भी। लेकिन उन्होंने दोनों बनाए। दोनों के साथ आने पर ही जीवन का चक्र आगे बढ़ता है। जीवन में रस घुलते हैं? अभी तुझे आदित्य का साथ अच्छा लगता है न?"

अनन्या दादी के गले लिपट गई। दादी ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा– "नाम लेना या न लेना मायने नहीं रखता... आपसी समझ, एक दूसरे के लिए सम्मान और समर्पण मायने रखता है।" अनन्या मुस्कुरा दी। उसे लगा, पुराने लोग सच में कितने गहरे होते थे। तभी फिर उसके फोन की घंटी बजी। "कंवर सा का फोन है?"– दादी ने छेड़ा। "हाँ दादी.. आदित्य का ही..।" अनन्या ने हँसते हुए कहा।

"अच्छा है... नाम ले ले। बस याद रखना, चाहे नाम लो या 'वेई' कहो... रिश्ता हमेशा सम्मान और समझदारी से ही सुंदर बनता है।" दादी ने जैसे उसे एक बार फिर याद दिलाया। तभी एक और पत्ता गिरा। अनन्या ने उसको उठाकर अपनी हथेली पर रख लिया। उसे लगा,परम्पराएँ भी ऐसी ही होती हैं... कुछ छूट जाती हैं, कुछ थाम ली जाती हैं और कुछ... हृदय में बस जाती हैं। आंगन में अब सिर्फ धूप नहीं थी, दो पीढ़ियों के बीच समझ का एक नया उजाला फैल चुका था।

वीर हकीकत राय

हकीकत राय का जन्म 1719 में पंजाब के स्यालकोट शहर में हुआ था। वे अपने पिता भागमल के इकलौते पुत्र थे। भागमल ने अपने पुत्र को फारसी पढ़ने मदरसे भेजा। वहां के मुस्लिम बच्चे हकीकत राय को परेशान करते थे। कुछ शरारती मुस्लिम बच्चों ने हकीकत राय के विरुद्ध वहां के काजी को झूठी बातें कहकर भड़का दिया। काजी ने हकीकत राय को इस्लाम धर्म स्वीकार करने को कहा। हकीकत राय ने कहा कि मैं अपना शरीर छोड़ सकता हूं किन्तु धर्म नहीं छोड़ सकता। अंत में हकीकत राय को लाहौर के हाकिम के पास भेजा गया। हाकिम ने भी हकीकत राय एवं उसके पिता से कहा कि अगर हकीकत राय इस्लाम धर्म स्वीकार कर ले तो उसकी जान बख्शी जा सकती है। हकीकत राय के पिता ने भी हकीकत राय को समझाया कि – "अपनी जान बचाने के लिए इस्लाम धर्म स्वीकार कर ले", परन्तु हकीकत राय ने साफ कह दिया कि मैं अपना धर्म नहीं छोड़ सकता चाहे जान ही क्यों न चली जाए। इस बात पर हाकिम के आदेश पर जल्लाद ने हकीकत राय का सिर काट दिया। हकीकत राय की पत्नी मृत देह के साथ सती हो गई तथा माता–पिता ने पुत्र वियोग में प्राण त्याग दिये। धर्म भीरू हकीकत राय को शत–शत नमन्

शिक्षा के क्षेत्र में सुधार लाना चाहते हैं 69वीं रैंक पाने वाले अनुज पंत

नंदग्राम के अनुज पंत ने यूपीएससी की सीएसई में आज इंडिया 69वीं रैंक हासिल की है। अनुज 2024 में आइपीएस बने थे। इसके बाद भी बेहतर रैंक क लिए प्रयास जारी रखा। वह शिक्षा के क्षेत्र में सुधार के लिए कार्य करना चाहते हैं। अनुज के पिता दिनेश पंत एक निजी कंपनी से सेवानिवृत्त हैं और मां मीना पंत गृहणी है। अनुज ने राजनगर स्थित सरस्वती विद्या मंदिर से पढ़ाई की है और दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातक किया। 2022 से उन्होंने सिविल सर्विस की तैयारी करनी शुरू की। पहले प्रयास में वह साक्षात्कार में रह गए थे। दूसरे प्रयास में आइपीएस बने। अब तीसरे प्रयास में बेहतर रैंक हासिल कर आइएएस बने हैं। अनुज ने बिना किसी कोचिंग की मदद के खुद पढ़ाई की है।

कविता

क्यों स्वतंत्र होकर भी मेरा भारत लहू–लुहान हुआ है?
खण्डित प्रतिमा की पूजा की, धर्म विरुद्ध विधान हुआ है।
इसीलिए होकर स्वतंत्र भी, भारत लहू–लुहान हुआ है।।

धर्म–ज्ञान–विज्ञान ,गणित में, इस दुनिया को राह दिखाई
नहीं सरोवर, सरिता हमने, सागर में भी में राह बनाई।।
सोने की चिड़ियां बनकर भी, नहीं कभी अभिमान हुआ है।
क्यों स्वतंत्र होकर भी, भारत लहू–लुहान हुआ है?

जननी, जन्म भूमि को हमने, नहीं धरा का टुकड़ा माना।
यह दुर्गा, मां सरस्वती है, और लक्ष्मी है यह माना।।
खण्डित रूपा भारत मां है, यही अशुभ विधान हुआ है।
इसीलिए होकर स्वतंत्र यह, भारत लहू–लुहान हुआ है।।

दशम गुरु ने तीन पीढ़ियां, जिसकी खातिर बलि चढ़ाई।
सिंह पुत्र, बंदा बैरागी ने, अपनी काया नुचवाई है।
देश–धर्म–संस्कृति लुटा कर कब किसका सम्मान हुआ है।
इसीलिए होकर स्वतंत्र यह, भारत लहू–लुहान हुआ है।।

संस्कृति का गौरव खोकर जो जिये, वही निःशेष हो गये,
रोम–मिश्र–यूनान सरीखों के खण्डर अवशेष रह गये।
जब–जब हिन्दू जगा विश्व में, सचमुच स्वर्ण विहान हुआ है
क्यों स्वतंत्र होकर भी मेरा भारत लहू–लुहान हुआ है?
खण्डित प्रतिमा की पूजा की, धर्म विरुद्ध विधान हुआ।

निर्माणों के पावन युग में हम चरित्र निर्माण न भूलें।
स्वार्थ साधना की आँधी में वसुधा का कल्याण न भूले।।

प्रवेश प्रारम्भ

राष्ट्र गौरव
विद्या भारती विद्यालय

प्रवेश प्रारम्भ

सरस्वती शिशु एवं विद्या मन्दिर इण्टर कालेज

केशवनगर, (लखपेड़ाबाग) बाराबंकी, दूरभाष - 8004031745

इण्टरमीडिएट तक विज्ञान,वाणिज्य व कम्प्यूटर की मान्यता

हमारा संकल्प-अभिभावकों का विकल्प

नर्सरी से इण्टर तक खेल एवं शिक्षा हेतु विशेष संसाधनो की व्यवस्था

वाहन सुविधा उपलब्ध

प्रवेश सूचना

- नर्सरी से इण्टर तक की कक्षाओं में प्रवेश प्रारम्भ।
- प्रवेश परीक्षा के पाठ्यक्रम का आधार पूर्व कक्षा का पाठ्यक्रम।
- प्रवेश फार्म मिलने का समय 8:00 से सायं 3:00 बजे तक।
- सरस्वती विद्या मन्दिर एवं शिशु मन्दिर में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं का प्रवेश सीधे प्रवेश परीक्षा के द्वारा होगा।
- नर्सरी से कक्षा 12 तक अंग्रेजी माध्यम की कक्षाएं प्रारम्भ

विशेष

1. आधुनिक शिक्षा पद्धति के आधार पर प्रोजेक्टर एवं स्मार्ट क्लास की व्यवस्था।
2. वाणिज्य वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं के लिये कैरियर काउन्सलिंग की व्यवस्था।
3. योग की कक्षायें नियमित संचालित।

हमारी विशेषताएं

- छात्र व्यक्तित्व विकास हेतु विषय विशेषज्ञों द्वारा मार्गदर्शन।
- सुसज्जित एवं हवादार कक्षा कक्ष • योग्य एवं प्रशिक्षित अध्यापकों द्वारा शिक्षण।
- विशाल क्रीड़ांगन • शत-प्रतिशत एवं श्रेष्ठ परीक्षाफल।
- वाणिज्य वर्ग की उत्तम शिक्षा • Spoken English Group Discussion की व्यवस्था।
- मनोवैज्ञानिक एवं योगाधारित शिक्षा • समृद्ध पुस्तकालय।
- कम्प्यूटर की आधुनिक प्रयोगशाला • सुसज्जित विज्ञान प्रयोगशालायें।
- मा0शि0प0 द्वारा "अ" श्रेणी का प्रमाण-पत्र तथा जिलाधिकारी एवं जि0वि0नि0 द्वारा प्रदत्त प्रशस्ति -पत्र।
- अखिल भारतीय विज्ञान मेला में विद्या भारती द्वारा विद्यालय को प्रथम स्थान।

संतोष सिंह
प्रबंधक
मो. नं. 9415596225

Physics

Chemistry

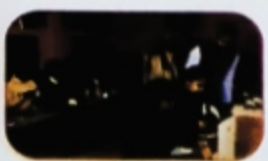
Biology

शैलेन्द्र प्रताप सिंह
प्रधानाचार्य

NIRALA WORLD

Nirala Gateway

Sector 12, Greater Noida (W).

RETAIL | OFFICE | STUDIO APARTMENTS

Project Id: (UPRERAPRJ531916/06/2025)
Registration Date: 17-06-2025
Promoter Name: Parth Builtech Private Limited
Promoter Id: (UPRERAPRM348231)
Website: https://www.up-rera.in/projects